लिहाज़ फर्मावें। आज आफताब गुरूब होते २ तमाम लश्कर यहां दाखिल हो जायगा और अगर आप लोगों में एक शख़्स ज़रा तकलीफ़ करके अपने कोठे या किले के बुर्ज पर से देखे तो उसे मालूम हो जायगा कि क्योंकर पिंडारी लोग बढ़ते चले आते हैं। कितनेही उम्दे बस्ते हुये गांवों में जिन्हें मैं अच्छी हालत में छोड़ आया था एक मकान था एक दरख़्त भी साबित नहीं है और अगर आप लोग भी योंही फ़जूल वक़्त जाया करेंगे तो अफ़सोस है कि आपके शहर की भी वही हालत होगी, न कि फकत यह जलायाही जावेगा बल्कि आप लोगों की तमाम दौलत और हश्मत मेरे ये लोग लूट लेंगे — और आप के बहू बेटियों की इज़्ज़त भी खराब होगी इस लिये मैं आप लोगों को पेश्तर से खबरदार किये देता हूं। आपकी ताकत नहीं कि आप हमारा मुकाबला कर सकें, और अगर आप इनकार करते हैं तो मुझे यह जिता देने का हुक्म है कि नवाब साहब का डेरा यहां चन्दरोज़ तक कायम रहेगा और उनके लोग हर रोज़ आप लोगों के जनानखाने में घुस घुस कर तकलीफ़ देंगे और बेइज़्ज़ती करेंगे। इसलिये जाइये, अक़्लमंदी पकड़िये और आपस में सलाह कीजिये, फिर मैंने अपनी तलवार ज़मीन पर फेंक कर कहा कि जबतक इस दरख़्त का साया मेरे इस तलवार के पार हो तब तक आप लोग इसका जवाब लाइये जो काबिल आप के नाम और अक़्लमंदी के हो वर्ना याद रखिये आपके मकानात येही हैं, इनशाअल्ला हम लोग अपना बन्दोबस्त आपही कर लेंगे"।

मेरे तमाम लोग जो मेरे इर्दगिर्द खड़े थे बोल उठे 'खूब कहा! मगर मीर-साहब हम लोग इसी दम अपना बन्दोबस्त क्यों न कर लें, इन बख़ील सौदागरों को मुतलक इस बात का लिहाज़ नहीं हो सकता कि हमारे जैसे इज़्ज़तदार लोगों को जिन्हें सफ़र दूरदराज़ दरपेश है किस कदर रुपये की ज़रूरत है"। मैंने कहा 'खैर देख लोजिये वे लोग क्या जवाब लाते हैं तब तक आप लोग खामोश और बाकायदे रहें उनके मश्वरत में मदाखिलत न करें और न शहर के किसी बाशिन्दे को तकलीफ़ पहुंचावें"।

वक़्त अनकरीब आ गया मेरे तलवार का फ़कत मुठाही धूप में रह गया। मैंने देखा कि सौदागरों की बहस आज खतम नहीं हुआ चाहती क्योंकि ये

सब आपस में नाराज़ हो कर बहस कर रहे थे कभी एक राज़ी होता तो दूसरा छटक जाता और जब वह मानता तो तीसरा खफ़ा हो जाता था।

मैं उस बढ़ते हुये साये को निहायत शौक़ से देख रहा था और बार २ उन्हें चिताता था कि मुकर्ररा वक़्त खतम हुआ चाहता है; आखिरकार मुहे पर से धूप बिलकुल जाती रही और मेरे तलवार उठाते ही तमाम लोगों ने ललकार के साथ आवाज़ दी।

तलवार उठी देखतेही सौदागरों का दम निकल गया और सब के सब गरोह बांध कर मेरे पास आये।

उनमें से एक शख्स जो सब से मोटा और सभों का सरदार मालूम होता था कहने लगा "बैठ जाइये, मीरसाहब, बैठ जाइये, हम लोग आहिस्ते और बगौर इस मुआमले पर बहस करें। जो काम उजलत और गुस्से से किया जाता है उसका नतीजा हमेशा खराब और नापसन्द होता है"।

मैंने कहा 'नहीं, बैठने की कुछ ज़रूरत नहीं है जो कुछ तुम्हें कहना हो कहो मैं खड़ेही खड़े सुनता हूं। याद रक्खो कि मेरे तलवार खींचतेही लूट शुरू हो जायगी और गोकि इन दिलेर सिपाहियों पर मेरा चन्दा इख़्तियार है जिन्हें खुश करना तुम्हारा फ़र्ज़ है लेकिन अगर ये नाउम्मेद हुये तो मेरा इख़्तियार उसी दम खतम समझिये फिर अगर किसी की जान जाय तो उसके लिये मुझे इलजाम मत दीजियेगा'।

उस बड़े साहूकार ने कहा "अच्छा, आप दम भर के वास्ते इधर आइये, मैं कुछ आप से तखलिये में कहा चाहता हूं, आप साहूकार से किसी किस्म के दगाबाज़ी का खौफ़ न कीजिये"।

हम सब हँस पड़े, मैंने कहा "नहीं नहीं मैं मुतलक़ खौफ़ नहीं खाता, अच्छा चलिये"। फिर मैंने अपने लोगों की तरफ़ देख कर कहा "देखो खूब ख्याल रक्खो कि इन भलेमानसों मे से कोई भी शख्स भागने न पावे"।

मैं उस साहूकार के साथ चन्द कदम जाकर कहने लगा 'कहिये क्या कहते हैं, जल्द कहिये मेरे लोग बे सब्र हो रहे हैं और आप के इन मकानात और दूकानों की हशमत देखकर उनके दिल में लूट की आतश भड़क रही है"।

उसने जवाब दिया "सुनिये आप सरदार हैं आप के तौर से ज़ाहिर होता है कि बेशक आप का इख़्तियार और हुक्म इन पर ज़्यादा है। आप के साथ ५०० आदमी से ज़्यादा नहीं हैं। १००००) रु० तो हम लोग आप का हिस्सा देते हैं एक एक हज़ार आप के हर एक सरदार को और सौ सौ रुपया फी आदमी नजर करते हैं। अनकरीब एक लाख तो यह हुआ, बाकी के असल गरोह आने पर हमलोग उनसे भी बमिग्नत फैसला कर लेंगे अब कहिये क्या कहते हैं फौरन् हुक्म दीजिये क्योंकि रुपया तयार है और गरोह के पहुंचने के पेश्तर बआसानी तक़सीम हो सकता है।

इस पर मैंने कुछ देर तक गौर किया, मैं जानता था कि चीतू आपही अपनी शर्तें तै कर लेगा। पस अगर उसके आने के पेश्तर लूट में से जो कुछ मैं पासकूं क्या नुकसान है। मैं यह भी जानता था कि उसे दस लाख की उम्मेद थी सो तो वह लेहीगा चाहे जिस तरह हो। फिर साहूकार ने कहा "सुनिये आप तो हरावल के सरदार हैं आप को कुछ करना नहीं है, अपना रुपया लीजिये और आगे बढ़ जाइये और जिस गांव में जा रहियेगा आप को वहां सब तरह का आराम मिलेगा और चीतू को इसका कुछ हाल मालूम भी न होगा"।

मैंने कहा "नहीं नहीं हम लोग यहीं रहेंगे आज २५ कोस की मंजिल तै करने के बाद अब हमारी ख़्वाहिश आगे जाने की नहीं है। लेकिन लाख रुपये के पाते ही मैं अपने तमाम आदमियों को लेकर शहर के बाहर चला जाऊंगा। जान रखिये कि जो कुछ हम लोग पावेंगे उसका तीसरा हिस्सा तो हमारे सरदार को दिया जायगा। इसलिये हम लोगों को कुछ ज़्यादा फायदा नहीं है।'

उसने कहा "मंजूर है, अब अपने आदमियों के पास चलिये और उन्हें चुप करा दीजिये जितना वे हमारे साथ नेकसलूक करने से पावेंगे उतना उन्हें ज़ोरो ज़ुल्म करने से हर्गिज़ दस्तयाब न होगा"।

हम दोनों फिर गरोह को वापस आये और मैंने अपने लोगों को वे शर्तें जो हमारे और साहूकार के दर्मियान तै पाई थीं सुना दीं, सभों ने ज़ोर से चिल्ला कर कहा जिससे आसमान गूंज उठा "मंजूर है, मंजूर है, लाओ रुपया लाओ रुपया" !!!

रुपया पेश्तरही जमा हो चुका था क्योंकि थोड़े ही अर्से बाद जहां हम लोग बैठे थे उसके पासवाली गली से कतार के कतार लोग रुपयों की थैली लादे हुये निकले; पिण्डारियों का हरएक दफा अपने २ दफ़ेदार के मातहत बारी बारी से उस मुकाम पर आने लगा, हर एक शख्स अपना सौ रुपया और हर एक सरदार अपने हज़ार रुपया का हिस्सा पाता जिसे वे लोग अपने चारजामें के बड़े थैले में भर भर कर चले जाते थे।

पीरखां ने पूछा "मीरसाहब! क्या आपने अपने लिये कुछ बन्दोबस्त नहीं किया? मैं देखता हूं आपने तो कुछ भी नहीं लिया"।

मैंने कहा "आह! मेरे लिये कुछ परवाह न कीजिये मैं अपना हिस्सा पा जाऊंगा, थैली बड़ी तो नहीं मालूम पड़ती मगर इसमें सोना भर लिया जायगा"।

उसकी आंखें चमक उठीं और वह कहने लगा "ठीक है मगर दूसरों को इस की खबर न हो"।

"एक हर्फ भी नहीं—यह तो फ़कत तुम्हें और मुझे मालूम है। अब इस लोगों को इस बात पर लिहाज़ रखना चाहिये कि ये नामाकूल कुछ ज़्यादती या ज़बर्दस्ती न करें, मैं देखता हूं कि इनकी तबीयत शहर में लूट करने की तरफ़ ज़्यादा रगबत खाती है"।

उसने कहा "जी नहीं, वे अनकरीब आसूदा होगये हैं, खास कर मैं अपने बारे में कहता हूं। अल्लाह जानता है मीरसाहब, यह निहायत उमदा शिकार हाथ लगा, गोकि हम लोग अपने कार में खुशकिस्मत थे मगर एक ही दिन हज़ार रुपया हाथ लगना हमारे उस रोज़गार से कहीं बेहतर है"।

मैंने कहा "चुप, यह मौका अपना राज ज़ाहिर करने का नहीं, इस वक़्त चल दो, और ताकीद रक्खो कि ये सब लोग शहर के बाहर लश्कर डालें। मैं चन्द लोगों के हमराह यहीं रहूंगा ताकि देखूं कि चीतू के आने पर इसकी क्या हालत होती है"।

एक एक करके सब पिण्डारी रवाना हो गये, फ़कत चन्द शख्स मेरे हुक्म से वहीं ठहरे रहे, और चूंकि अब हमारा कोई काम न था हम लोग बैठ कर चीतू का इन्तज़ार देखने लगे"।

इतने में वह मोटा साहूकार मेरे पास आ बैठा और पूछने लगा "मीरसाहब! आप कह सकते हैं कि नव्वाब साहब किस कदर तलब फ़र्मावेंगे ?"

मैंने कहा 'मैं नहीं जानता, मगर बेहतर होगा कि आप लोग एक दम अपनी फ़राखदिली को जगह दें वर्नः वह आप का तमाम शहर खाक स्याह कर देगा, और आप जानतेही हैं कि पिण्डारी कैसे बदबला होते हैं, उन्हें किसी बात का लिहाज़ नहीं रहता, अगलब है कि वे आप पर जिस्मानी ज़ुल्म करें"।

ज़ुल्म का नाम सुनतेही तमाम मजमे का मजमा कांप उठा और मैंने देखा कि यह बात खूब मौके से कही गई। फिर मैंने कहा "कोड़ों को तो आप जानतेही होंगे, बस आपकी पीठ खोल २ कर सटासट कोड़े उड़ने लगेंगे; इस के अलावा कितनेही ऐसे हैं जो उँगलियों को बाँध कर कोने पर बेंत मारते हैं जिसमें निहायत तकलीफ़ होती है, और इन तोबड़ों में कई चीजें मिला कर आप लोगों के मुंह पर बाँधे जाँयगे। मैंने सुना है कि ज़िद्दी साहूकारों से रुपया वसूल करने के लिये वे लोग इससे भी बदतर तदबीरें काम में लाते हैं, मगर आपलोग अक्लमन्द हैं इसलिये आप को आगाही कर दी जाती है"।

एक दूसरा साहूकार जो अब तक खामोश था कहने लगा "कहिये मीर-साहब, हम लोग कितने रुपयों का बन्दोबस्त करें और कितने पिण्डारी आप के साथ हैं ? हमने सुना है कि कुल पांच हज़ार हैं'।

मैंने कहा 'सेठ जी, आपने कुछ कम शुमार किया। हम लोग दस हज़ार से कुछ कम हैं। अब थोड़ी देर में तमाम लश्कर आप के साम्हने आही न जाता है आप खुदही इसका फैसला कर लीजियेगा। रुपये के बारे में जो आप पूछते हैं तो अौव्वल तो एक लाख रुपया खुद नव्वाब साहब चीतू के वास्ते चाहिये— मैं जानता हूं कि उन्हें इतने की उम्मेद है:—फिर उनके तीन सरदार हैं, हीरू, गफूरखां और राजन्—हरएक के लिये पचास हज़ार चाहिये। हर छोटे सर्दार और दफेदार को एक एक हज़ार और हर पिण्डारी को कम से कम एक सौ; आपही कहिये मैं कुछ बेजा कहता हूं ?"।

सब के सब एक साथही कहने लगे "भगवान रच्छा करे, हम तो इतने ही में सत्यानाश हो जांयगे- मर जांयगे। यह तो करीब आठ लाख रुपये होते हैं,

इतना हम लोग कहां से लावें ? हमलोग तो तबाह हो गये, इससे तो हमें योंही मार डालिये"।

मैंने कहा "नहीं, नहीं, दोस्तो, ऐसी क्या बात है, तमाम दुनिया जानती है कि अमरावती हिन्दोस्तान में सब से दौलतमन्द शहर है, हैदराबाद से भी बढ़ कर—यहां रुपयों का शुमार लाखों से नहीं बल्कि करोड़ों से होता है; पस चीतू के साम्हने इसतरह अपनी गरीबी जाहिर मत करियेगा वर्नः वह तो उसी दम आप की सचाई या झूठाई सूबूत कर देगा। मेरा कहना मानिये, सब से महफूज तरीका यही है कि उसके आतेही जहां तक मुमकिन हो ज्यादा रुपया दो क्योंकि अभी उसे सफ़र दूरदराज़ करना बाकी है; निमावड़ से रवाना होने के बाद हमारे लोगों ने कुछ भो नहीं पाया और वे बहुत भूखे और प्यासे हैं।

उस मोटे साहूकार ने कहा "मैं आप सब लोगों से कहता हूं कि हमारे मीर साहब सच कहते हैं भगवान ने यह गर्दी हम पर डाली है और अब जो भाग में है सो होगा। अपनी बहुबेटियों की बेइज्जती अपनी आंखों के सामने देखने से यह अच्छा है कि जो कुछ हमारे पास हो कौड़ी २ दे दें, बस मैं तो कह चुका"।

मैंने कहा "ठीक है, अब तुम अक्लमन्दों के म्वाफिक बोलते हो, अब मैं तुम्हें दूसरी नेक सलाह देता हूं। चीतू बड़ा आदमी और इज्जतपसन्द है—वाजिब ही है—यही हालत दूसरे सरदारों की भी समझो। जाओ पान अतर मसाला ले आओ और इन्हें एक एक किश्ती में सजा कर मैं चन्द दुशालों के उनके बैठतेही ले कर हाजिर हो, 'आप लोगों में से एक शख्स कोई निहायत उमदः दुशाले को जोड़ उन्हें ओढ़ा देना और दूसरे सरदारों को भी, और तब अपनी नजर उन के सामने यों गुजारना गोया तुम हजरत सिकन्दरजाह के सामने खड़े हो, इनशअल्ला ऐसा करने से उनकी निगाहे मेहर तुम पर होगी और जहां आप को दस लाख देनी होगा तहां आपका काम आधे ही में चल जायगा और आपलोगों का शहर भी बच जायगा'।

सब ने कहा "गंगा जानती है ठीक कहा मीरसाहब आप हमारे दोस्त हैं और नेक सलाह देते हैं, बगैर आप के समझाये भला हम लोग क्या जानें कि क्या करना होता"-फिर मैंने कहा "देखो कोई मनहूस या रोनी सूरत का शख्स

उन के रूबरू न आवे बलकि हर एक शखस उनके आने पर खुश व खुर्रम मालूम हो। आप लोगों में से कोई शखस खौफ न खाये जब तक खौफ की कोई बात न हो। देना तो आप को पड़ेहीगा इसलिये बेहतर है कि आप लोग उसे साथ खुशदिली से देवें।

इन सभों ने मेरी सलाह पी ली, कभी तो मैं उन्हें तसल्ली देता और कभी खौफ देकर घबड़ा देता, योंही शाम हो गई। घोड़ों के टाप और पथर-कलों के कूटने से मालूम हुआ कि चीतू का गरोह शहर मे वारिद हो गया।

सब साहूकार मेरे इर्द गिर्द जमा हो कर कहने लगे "अब हमारी तरफ़ दे-खिये, आप हमारे दोस्त हैं आपही हमें नव्वाब साहब के रूबरू पेश कोजियेगा, हम लोग डरेंगे नहीं; "मगर यह बात फ़कत उनके जबानहीं पर थी क्योंकि हर एक का दांत मारे खौफ़ के कांप रहा था और चीतू के गजब से उनके चेहरे का रंग उड़ा जाता था।

कुछ देर बाद, चीतू घोड़े पर सवार चौक में पहुंचा उसके चारो तरफ़ कित-नेही वहशी पिंडारी तलवार खींचे अपने २ घोड़े पर सवार चले आते थे, एक तो योंही उनकी शकल खौफ़नाक थी दूसरे रास्ते के गर्द गुब्बार और शाम की ता-रीकी के बाइस वे और भी खतरनाक मालूम होते थे, कोई बोसियों नकीब गले फाड़ फाड़ कर चीतू के जलाल और दबदबे की तारीफ़ करते चले आते थे।

आगे २ मैं और पीछे २ साहूकारों का तमाम गरोह आगे बढ़ा, उस मोटे सा-हूकार ने जो सभों का सर्दार था चीतू के रकाब से सरोचश्म लगा कर दस्तबस्त: हो उतरने की अर्ज़ की और बमिन्नत कहने लगा कि "हुजूर दम भर आराम फ़र्मावें, ज़्याफ़त तयार है और बहुतेरे लोग नज़र लिये हुजूरवाली के इन्त-ज़ार में खड़े हैं।"

मैंने भी आहिस्ते से कह दिया "हुजूर, इन लोगों की नज़र कुबूल फ़र्माना चाहिये"।

चीतू ने फिर कर कहा 'कौन है यह शैतान! मैं इसकी आवाज़ तो कुछ पहिचानता हूं"।

मैंने अर्ज़ की "हुजूर का खादिम अमीरअली है"।

"खैर, तो ठीक है! क्या आप भी साहूकार हो गये मीरसाहब?"

मैंने कहा "अगर तावेदार का कुछ कुसूर हो तो गर्दन मारी जाय, गुलाम तो इन अशराफ़ों के साथ फ़कत इसलिये खड़ा हुआ कि ये कहते थे कि हुजूर के जल्लोजलाल के रूबरू आतेही हम लोगों का दम मारे खौफ़ के निकल जायगा। बन्दा हुजूर की आमद तक इन्हें तसल्ली दे रहा था"।

चीतू ने कहा "खैर तुमने अच्छा किया, सब कुछ मौजूद है?"

साहूकारों ने एक आवाज़ से हाथ बाँध कर कहा "सब कुछ मौजूद है, हुजूर तशरीफ़ लावें हम लोग ताज़ीम के लिये हाज़िर हैं"।

चीतू घोड़े पर से उतर पड़ा और वह बड़ा साहूकार उसे हाथ का सहारा दे पासही के एक मकान में जो किसी सौदागर का था ले गया जहां दरी पर निहायत साफ़ फ़र्श बिछा और गद्दी और मसनद लगा था। कमरा भी खूब ही रौशन और आरास्ता किया हुआ था। चीतू ने गद्दी पर बैठ साथ खुशी के इर्द गिर्द निगाह फेरी, गोकि उसकी शक्ल निहायत खौफ़नाक थी ताहम् इस वक़ उसके चेहरे पर कुछ मुस्कुराहट की झलक नज़र आती थी।

चीतू ने राजन् से जिस पर वह निहायत मिहर्बान था और जो पासही बैठा था कहा 'ये मुअज्ज़िज़ लोग हैं, मुझे ऐसी उम्मेद न थी, क्या आप ख्याल करते थे कि ये लोग इस कदर शाइस्त: निकलेंगे?"

उसने कहा "जी नहीं, मुझे तो ख्याल था कि हम लोग तलवार के ज़ोर से शहर में वारिद होंगे। आप एतकाद रखिये, यह सब कारपर्दाज़ी अमीरअली साहब की है"।

चीतू ने कहा "अगलब है, वह खुद मुअज्ज़िज़ शख्स है और जानता है कि अशराफ़ों की खातिरदारी किस तौर होनी चाहिये। अगर वह न होता तो ये सूअर अपने २ मकानों के अन्दर छिप गये होते और हमें इस बात की तकलीफ़ देते कि हम इन्हें कान पकड़ कर बाहर निकालते। खैर देखो, अब ये क्या करते हैं?"

साहूकार ने मुझे ज़रा सा खोद दिया और आहिस्ते कान में कहने लगा कि हम लोगों की नज़र कुबूल होने के लिये अर्ज़ कर दीजिये। मैं कुछ पशो-

पेश करने लगा, उसने कहा अगर आप नज़र मंजूर करा देंगे तो ५००) आप के लिये भी हाज़िर हैं। मैंने कहा "अच्छा ठहरो, मगर याद रक्खो अगर न दोगे तो मैं इसका सख़ एवज़ लूंगा"।

उसने फिर निहायत मिन्नत से अर्ज़ की 'गंगा जाने, मेरी जमुना जाने, मीरसाहब। मैं इसका दूना आप की नज़र करूंगा, आप ज़रा हमारे लिये कह दीजिये, आप तो हमारे दोस्त और भाई हैं"।

चीतू ने गुस्से से पूछा "ये बदमाश गधे के जने क्या फुसफुसा रहे हैं? क्यों नहीं साफ़ साफ़ कहते?"

मैंने कहा "खुदावन्द! हुज़ूर के नाम का खौफ़ यहां पेश्तर ही से ग़ालिब हो रहा है" - वह मुस्कुराया - "और जो कुछ इन लोगों ने सुना था उससे कहीं ज्यादा हुज़ूर का जलाल देख, अल्ला जानता है कि इनकी ज़ुबान बन्द हो गई है; इनकी ख़्वाहिश है कि ये लोग हुज़ूर के कदमों पर हुज़ूर के लायक नज़र गुज़ारें मगर मारे खौफ़ और दबदबे के अर्ज़ नहीं कर सकते, इसलिये इन्होंने इस खादिम से कहा है कि ताबेदार हुज़ूर की खिदमत में गुज़ारिश कर दे"।

चीतू ने कहा 'कुबूल है, लाओ तश्तरियां। बिलाशक अमरावती के साहूकारों की नज़र भी काबिलदीद होगी"।

पंदरह तश्तरियां निहायत उम्दे मखमल से ढकी हुई आई और मसनद के आगे रख दी गईं, एक एक कर के रुमाल हटाया गया और दरहकीकत नज़र से लोगों की आंखें खुल गईं।

चार तश्तरियां तो छुहारे, पिश्ते, मिठाइयां और मिश्री से भरी थीं, बाकी में अनवाय अकसाम के कपड़े, मसलन् अंग्रेज़ी और हिन्दुस्तानी मलमल, छींट, बेशक़ीमती दस्तार और बनारसी किमख़ाब थे। यह नज़र काबिल राजों के थी और चीतू इससे निहायत खुश हुआ।

मैंने साहूकार से कहा "यह मौका अच्छा है, लाओ, दुशाले और अशर्फियां कहां हैं? ज़रा दिल कड़ा करके दुशाला ओढ़ा दो जैसे आप अपने ब्याह शादी में ज़ात बिरादर को ओढ़ाते हैं"।

साहूकार ने नौकर से दुशाला ले लिया और उन पर ५ अशर्फियां रख चीतू के कदमों के करीब पहुंचा और तस्लीमात अर्ज़ कर मोहरें नज़र कीं, फिर दुशाले की जोड़ी जो निहायत बेशकीमती थी खोलकर उसे ओढ़ा दी और उलटे पैर पीछे जाकर निहायत आजिज़ी से सीने पर हाथ जोड़ खड़ा हो गया।

चौतीसवां पर्व्व।

चीतू अपनी इस खातिरदारी से जो अमरावती वालों ने की बागोबाग हो गया और साथ मुस्कुराहट के उस ज़रीन दुशाले को देखने लगा जो उसकी बदन पर साहूकार ने ओढ़ा दिया था।

फिर उसने गफूरखां से कहा "ये लोग अक्लमंद हैं और मालूम होता है कि अकसर इनके यहां आले दर्जे के लोगों का आना जाना होता है। हमे इतनी इनसानियत की हर्गिज़ उम्मेद न थी और जो सच पूछिये तो इस लम्बी सफ़र के बाद यह खातिर निहायत पसन्दीद है, मगर आप को तो ये भूल ही गये।"

साहूकार फ़ौरन् अपने बाज़ू पर चन्द दुशाले रख आगे बढ़ा और कहने लगा "जी नहीं हुजूर! हम लोग अपने लायक मेहमानों को हर्गिज़ फरामोश नहीं कर सकते।" इतना कह उसने एक एक जोड़ दुशाला हर एक सरदार को ओढ़ा दिया जिसे उन्होंने बशाशत के साथ कुबूल किया।

चीतू ने कहा "बस कमरा साफ़ हो, हमें इन अशराफ़ लोगों से कारे-ज़रूरी दर्पेश है जिसे बगैर ते किये मैं खाने पीने की कसम खा चुका हूं"।

सब लोग फ़ौरन् बाहर निकल गये, फकत हमारे सरदार और साहूकार लोग रह गये जो एक दूसरे पर यों गिरे पड़ते थे जैसे बाज के झपटने पर दूसरे परिन्द सब एकही में सिमटे जाते हों।"

चीतू ने कहा "इधर आगे बढ़ आओ, हमारे पास आकर बैठो हम तुम से कुछ बातें करेंगे"।

वे सब उठ खड़े हुये और हुक्म के मुताबिक मसनद के इर्द गिर्द बैठ गये।

चीतू ने कहा "हमारी गर्ज़ तो तुम जानतेही हो। हमे रुपये की ज़रूरत है, और रुपया ही हम लोग लेंगे चाहे जैसे दो। अगर तुम अक़्लमन्द हो तो फ़ौरन दौलत-कसीर देकर मुझ से और मेरे आदमियों से जो अज़हद वहशी हैं अपना पीछा छुड़ाओ। मेरी हर्गिज़ यह ख़्वाहिश नहीं है कि तुम्हें तकलीफ़ दूं और अगर कोई आफ़त तुम पर आवे तो हमारे सर पर है। पस कहो तुम किस क़दर देने को मुस्तैद हो?"

मेरे दोस्त उस साहूकार ने जो सब की तरफ़ से जवाब देने को मुकर्रर हुआ था दस्तबस्त अर्ज़ की "हुज़ूर बजा फ़र्माते हैं, सरकार के तशरीफ़ लाने की ख़बर ग़ुलामों को पेश्तरही मालूम होगई थी, और हुज़ूरवाली देखतेही हैं कि हमलोग ख़ौफ़ न खाकर अपनी ग़रीबी के म्वाफ़िक़ बन्देनेवाज की ख़िदमत में हाज़िर हुये हैं। हम लोगों को हुज़ूर के ख़ादिम मीरसाहब ने निहायत नेकसलाह दी है और उसी के मुताबिक़ हमलोगों ने एक फ़िहरिस्त चन्द नाचीज़ अशयाय और कुछ नक़द रुपयों की जो हमलोग हुज़ूर के क़दमों पर नज़र गुज़ारा चाहते हैं तयार की है।" इतना कह उस साहूकार ने एक काग़ज़ फ़ारसी का लिखा हुआ चीतू के हाथ में दे दिया।

चीतू ने कहा "मैं इसे पढ़ नहीं सकता, मैं मुनशी नहीं हूं, क्यों बिरादर आप लोगों में से कोई इसे पढ़ सकता है?"

सभों ने कहा "एक लफ़्ज़ भी नहीं, हम में से कोई शख़्स एक लफ़्ज़ की भी शिनाख़्त नहीं कर सकता।"

साहूकार ने कहा "हुक्म हो तो मैं किसी मुनशी को बुला लूं, एक तो अभी बाहर ही खड़ा था।"

मैंने कहा 'बन्दे की इजाज़त हो तो शायद ताबेदार कुछ मतलब निकाल सके'।

चीतू ने हँसकर कहा "वाह! तो तुम सिपाहगीरी और मुनशीगीरी दोनों करते हो। अच्छा, काग़ज़ लेकर सुनाओ तो कि इसमें क्या लिखा है?"

मैंने फ़िहरिस्त को कुछ देर तक देखने के बाद कहा "औव्वल तो इस काग़ज़ में लिखा है कि अमरावती के साहूकार वग़ैरः हज़रत चीतू साहब और उनके

फौज के आने की खबर सुनकर जमा हुये, और इस ख्वाहिश से कि उनके कदमों पर कुछ नज़र अपनी गरीब हैसियत के म्वाफिक गुजारें हम लोग अशियाये मुन्दर्जः जैल और नकद रुपये हुजूरवाला में गुज़ारते हैं फ़कत इसी लिये कि हम लोगों पर निगाह रहमत की रहे और हमेशः हुजूरवाला की मेहरबानी कायम रहे"।

चीतू ने कहा बहुत खूब। अब आप खास मतलब की बात को जल्द बयान करें क्योंकि मेरा पेट भूख की शिद्दत से कलकला रहा है और मुझे कोई शक नहीं है कि इन लायक़ शख्सों ने मेरे लिये उमदः खाना तैयार कर रक्खा होगा।

साहूकार ने कहा "हुजूर खाना तयार है, हुक्म हो तो दस्तर्ख्वान चुन दिया जाय, मगर हम गरीब हिन्दुओं का खाना हुजूर को शायद लज़ीज़ न मालूम हो इसलिये ताबेदारों ने शहर के औव्वल मशहूर बावर्ची से खाना पकवाया है।"

"चुप रह" चीतू ने घुड़क कर कहा "जब तुझे हुक्म दिया जाय तब बोल, बगैर इजाज़त हमारे बीच में दख्ल मत दे"।

साहूकार मारे खौफ़ के थर्राता हुआ पीछे हट गया, और मैंने फिर बआवाज़ बुलन्द पढ़ना शुरू किया।

"गरीबपर्वर" मैंने कहा औव्वल मद इसमें ५००००) की हुजूर के लिये है।

चीतू ने सुनतेही त्योरी बदल कर कहा "बस, फकत इतनाही !"

मैंने अर्ज की "हुजूर कुछ और भी है" एक तश्त चुनिन्दे जवाहिरात, सोने और चांदी की जिसकी कीमत पन्दरह हजार रुपये, और तीन तश्त दुशाले और बनारसी किमख्वाब के, हुजूर के महल के लिये जिनकी कीमत दस हज़ार है— कुल ७५०००) हुये। दोयम दस दस हज़ार रुपये हर भारी सरदार के लिये जिनका नाम हमलोगों ने सैय्यद अमीरअली साहब से सुना है, वे लोग तीन शख्स हैं, हर एक के लिये एक एक तश्तरी जवाहिरात की कीमती दो दो हज़ार की और एक एक तश्तरी दुशाले वगैरह की जिसकी कीमत पांच२ हजार है— कुल बीस बीस हजार रुपया हर एक सरदार के लिये हुआ।"

"आगे चलिये" चीतू ने कहा "अभी खतम तो नहीं हुआ?"

"जी नहीं" मैंने कागज़ की तरफ़ देख कर कहा "कुछ और भी है—सेयुम

हर एक दफेदार के लिये एक एक हजार, उनका शुमार हम नहीं जानते मगर गुमान करते हैं कि अनकरीब ३० दफेदार होंगे।"

चीतू ने कहा "अच्छा, आगे चलिये।"

मैं पढ़ने लगा 'चहारुम् लश्कर के हर शख्स को पचास रुपया, जिसे नव्वाब साहब वाजिब ख्याल फर्मावें इनायत करें। हमलोगों ने सुना है कि ऐसे लोग ४००० हैं। मासिवाय इसके खाना, दाना, रसद रसानी वगैरह उतने दिनों के लिये हाज़िर है जितने दिनों तक यहां सरकारी फौज मुकीम रहे । बस, अब हुजूर का क्या हुक्म है ?"।

चीतू ने कहा "खैर फिहरिस्त काफ़ी है, मगर चन्द उमूरात इसमें गलत है औव्वल तो ५० दफेदार हैं, क्यों गफूरखां साहब ठीक है न ?"।

उसने कहा 'जी हुजूर, मैं तो खुदही इन लोगों से कह चुका हूं"।

चीतू ने कहा "लिखिये मीरसाहब, फिर पांच हजार उमदे पिंडारी हमारे हमराह हैं, क्यों ठीक है न ?"

सब सर्दार ने कहा "सच है हुजूर बजा फर्माते हैं, निमावड़ में तो गिनती होही चुकी है।"

चीतू का यह कहना दरोग था, क्योंकि उस वक़्त बमुश्किल ४००० पिंडारी मौजूद थे, आधा लश्कर तो नर्मदा के दूसरी तरफ भीखू सर्दार के मातहत बँट गया था, मगर इससे क्या होता है क्योंकि मैं जानता था कि चीतू की खास ग-रज़ यह थी कि जिस कदर रुपया हो सके साहूकारों से वसूल किया जाय।

"लिखिये मीरसाहब, पांच हजार लिखिये और अब जोड़िये कितना हुआ?

मैंने फौरन् हिसाब जोड़ डाला और कागज़ पढ़ कर सुना दिया—"औव्वल' मैंने कहा "हुजूर के लिये ७५०००) है, दोयम् सर्दारों के हिसाब में साठ हजार, पचास दफेदारों के लिये पचास हजार और पांच हजार आदमियों के लिये ४०) फ़ी आदमी के हिसाब से २०००००)—कुल तीन लाख पचासी हजार का मीज़ान हुआ।"

तब चीतू ने गफूरखां से कहा "और घोड़ों की नाल भी तो घिस गई होंगी इसमें नये नाल की ज़रूरत है।"

'बेशक' खां ने कुछ मुस्कुरा कर जवाब दिया ।

'लिखिये, घोड़ों के नाल के लिये पन्दरह हजार रुपया, कुल पूरा पांच लाख हुआ न मीरसाहब ? पस इन अशराफ़ लोगों से कहिये कि फौरन् बिला तवक्कुफ रुपया दाखिल करें वर्ना हम खुद अपनी फ़िक्र कर लेते हैं" ।

साहूकारों में कुछ थोड़ीसी बहस दर्पेश हुई जिसे उन्हों ने जल्दी २ खतम कर ली कभी २ वे लोग आपस में नाराज़ हो उठते मगर उन्होंने अक्लमंदी की, इतने में मेरा वह मोटा दोस्त उठ खड़ा हुआ और आदाब बजाकर बोला "हुजूर रुपया मौजूद है और फौरन् हाज़िर होता है ।"

चीतू ने कहा "अच्छा, तो अब मेरा दस्तर्खान बिछाया जावे और देखो याद रक्खो कि कल सुबह के वक़्त तुलू आफताब से पेश्तर तमाम दफेदार इस मुकाम पर हाज़िर होकर अपना और अपने अपने आदमीयों का हिस्सा ले लेवें लहबर आगे बढ़े, क्योंकि ऐसी तवाजह होने पर मैं नहीं चाहता कि मेरे दोस्त इन साहूकारों को किसी किस्म की तकलीफ़ मेरे इस बेकायदा गरोह से हो ।"

सरदार लोग रवाना हो गये और मैं भी उनके साथ कमरे से बाहर जाने की तयारी करताही था कि चीतू ने मुझे बुलाकर कहा "इधर आइये मीरसाहब, आप मेरे साथ खाना खाइयेगा, इसमें शक नहीं कि आप के इन दोस्तों ने हम दोनों के लिये खाना तयार किया होगा ।"

मैंने कहा "जो हुक्म"—पस इतना कह मसनद के एक किनारे बैठ गया । फ़ौरन् एक उमदा दस्तर्खान बिछ गया और निहायत लजीज़ खाना चुन दिया गया । मुझे भी सफ़र के बाइस भूख कड़ी लगी थी इसलिये खूब खाया। बादजां सेर होने और खुशबूदार तम्बाखू पीने के चीतू ने मुझ से पूछा कि क्योंकर आप ने इस खातिर्दारी का इन्तज़ाम इन साहूकारों से कराया ?

मैंने उसे तमाम अहवाल सुना दिया मगर उस दस हज़ार का जो मैंने वसूल किया था मुतलक ज़िक्र न किया क्योंकि अगर मैंने उसका कुछ भी इशारा दिया होता तो उसने उसीदम कम से कम निस्फ़ अपना हिस्सा लगा लिया होता । फकत एक पीरखां को इसका हाल मालूम था क्योंकि उसी पर मैं अपना एतकाद रख सकता था ।

चीतू यह सुनकर निहायत खुश हुआ, मैं जानता था कि उसका इरादा बहुत रुपया वसूल करने का है पस इसी लिये मैंने कसदन् साहूकारों से उसकी ख़ाहिश से भी पार कह दिया था उधर मैंने उन्हें यह धमकी दी कि अगर तुम लोगों ने कुछ भी देने में आगा पीछा किया तो तुम्हारा तमाम शहर लूट लिया जायगा पस इसी खौफ़ के मारे उन लोगों ने इस कदर रुपया फौरन् पेश कर दिया।

चीतू ने कहा "मीर साहब, आप देखते हैं कि आपकी नेकचलनी और होशियारी से औव्वल तो मुझे पचहत्तर हज़ार रुपये का फायदा हुआ, फिर चूंकि हर पिंडारी ने चालीस चालीस रुपये पाये हैं यह सब मिलाकर एक लाख रुपया मुझे पड़ जायगा यह आगाज़ बिलाशक उम्दा हुआ।"

मैंने कहा "हुजूर का मर्तबः दोबाला हो, अगर गुलाम इसी तरह दो चार खिदमत और बजासके तो ऐन राहत हासिल हो और निहायत किस्मतवरी समझे मेरे साथ जो लोग थे उनके लिये भी मैंने वेही शर्तें कुबूल करली थीं जो हुजूर ने इन लोगों के लिये मंजूर की हैं और वे लोग उतनेही में आसूदा हो गये।"

उनने पूछा "और मीर साहब अपने लिये आपने क्या किया?"

मैंने कहा "जी योंही कुछ थोड़ा बहुत, अगर मैं चाहता तो मैंभी एक सर्दार के म्वाफ़िक आमदनी कर लेता मगर मैंने कहा क्या ज़रूरत है उन्होंने मुझे पांच हजार दिया और मैं उतने ही में राजी होगया।"

चीतू ने कहा "यह तो बहुत ही कम है, आइन्दे के लिये मैं आपको सलाह देता हूं कि जहां तक ज्यादा आप वसूल कर सकें बेशक करें। चूंकि इस मौके पर आपने हरावल के साथ इस उमदगी से काम किया है आइन्दे के लिये इस का इख़्तियार मैं आप के सुपुर्द करता हूं और गफूरखां को मैं किसी न किसी तरह राज़ी करलूंगा वह निहायत उमदा सिपाह है मगर उसकी अक्लमोटी है, वह हमेशः अपनाही फायदा चाहता और शहर और गावों में आग लगाना जानता है जिसके बाइस हम लोगों को उसका आधा भी दस्तयाब नहीं होता खासकर ऐसे २ दौलतमन्द मुकामों से, जैसा कि चन्दमीठे लफ़्ज़ों के इस्तयामाल और थोड़े बन्दोबस्त से मिल सकता है।"

मैंने कहा "अगर हुजूर की इनायत है तो इनशाअल्ला तावेदार हुजूर को हर्गिज़ मायूस न करेगा।"

मैं उससे विदा होकर साहूकारों के पास पहुंचा जो रुपयों का गंज आगे लगाये नीचे बैठे हुये गिन रहे थे।

मेरे पहुंचतेही वे सब उठ खड़े हुये और निहायत खुशी के साथ मेरा शुक्रीया अदा कर कहने लगे कि फ़कत आपही की मदद से इस वक़्त हम लोगों का तमाम काम बखूबी हो गया वर्ना कौन हमें रास्ता दिखलाता। तब वे मुझे ५००) देने लगे जो उन्होंने चीतू के रूबरू पेश करने के वक़्त देने का इकरार किया था"।

मैंने कहा "नहीं, नहीं दोस्तो, मैंने एक काम आप का कर दिया तो क्या हुआ, क्या मैं अपने उस एहसान को फरोख़ कर डालूं? जैसा मैंने आप लोगों के साथ सुलूक किया है वैसाही नेकसुलूक आप लोगों ने भी किया पस इसमें हम और आप दोनों बराबर हैं, मैं आप लोगों से फ़कत इतनाही चाहता हूं कि मेरे हिस्से का जो देवें वह सोने की सिल देवें ताकि मैं उसे बाआसानी घोड़े की खुर्जी में रख लूं और कुछ थोड़ा सा नक़द रुपया राह खर्च के लिये दे दीजियेगा"।

उस साहूकार ने कहा "बहुत अच्छा"। थोड़े ही देर बाद उसने सोना ला दिया और मैंने रख लिया—इसके बाद मैं साहूकार के चन्द आदमियों को हिफ़ाजत के लिये साथ ले खेमें की तरफ़ रवाना हुआ, दूरही से देखता क्या हूं कि शहर के बाहर मैदान में पचासों जगह आग बल रही है और झुंड के झुंड पिंडारी उसके इर्द गिर्द बैठे आग ताप रहे हैं क्योंकि रात के वक़्त सर्दी बहुत तेज़ पड़ती थी। मैं फ़ौरन् अपने छोटे खेमें में जा पहुंचा और वहां पीरखां की मदद से उन तमाम सोने की सिलों को जीन के खुर्जी में भर कर सी लिया। पस एकही रात में मैं दस हज़ार से मालामाल हो गया।

पीरखां ने कहा 'यह तो निहायत उम्दा कार है मीरसाहब? इसमें तो कुछ भी तकलीफ़ नहीं और फायदा इस कदर! अगर इसी तरह हम लोग हाथ

मारते जांयगे तो कुछ दिनों बाद इस कदर बेशुमार दौलत लेकर लौटेंगे जो सैकड़ों ठगी की चढ़ाई में सख़ मुसीबतों के उठाने पर भी दस्तयाब न होता"।

मैंने कहा "हरावल का गरोह मुझे हमेशा के लिये सुपुर्द हुआ है, और अगर इतने पर भी हम लोग अपना उमदा हिस्सा न ले सकें तो यह हमारा ही क़ुसूर है। मैंने तो क़सम खा ली है कि जब तक कोई पिंडारी सर्दार लश्कर उठावेगा तब तक मैं हर्गिज़ ठगी का काम न करूंगा"।

उसने कहा "और हम लोग भी आप के साथ हैं, मोतीराम और दूसरे शख़स भी इस कामयाबी पर निहायत खुश व खुर्रम हैं, हम लोगों में ऐसा कोई न था जिसने खूब हाथ न मारा हो क्योंकि हम लोग आप के पासही पास थे और साहूकारों ने हमें खूबही रिश्वत दी ता कि हमलोग उनकी शिफ़ारिस आप से कर दिया करें। उन सभों ने हम लोगों को भी दफ़ेदारही समझा और आप जानतेही हैं कि मैं और मोतीराम दोनों ने दफ़ेदारी का हिस्सा पाया"।

मैंने कहा "अगर तुम दरहक़ीकत बहुत जल्द दफ़ेदारी का वहदा हासिल न करो तो मेरा कोई क़ुसूर नहीं। सब लोग चालाक और फुर्तीले रहो, तुम्हारे घोड़े और हथियार तो लकोदक हुई हैं पस तुम फ़ौरन् सर्दार के निगाह में ऊँच जाओगे"।

दूसरे दिन तुलू आफताब से पेश्तरही मैं चीतू के पास जा पहुंचा। साहूकारों ने तमाम रुपया आपस में चन्दा कर और शहर से मांग कर जमा कर लिया था जो कुल पिंडारियों में वाजिब तौर से तक़सीम कर दिया गया। हरएक दफ़ादार अपने दफ़ा का हिस्सा आकर ले जाता था, वह बाखूबी जानता था कि अगर वह किसी शख़स को उसका वाजिब हक़ देने में धोखा देगा तो उसे सख़ तकलीफ़ उठाना होगा।

चन्द घण्टों के बाद, कुछ खा पीकर हरएक शख़स घोड़ें की पीठ लगा और नये शहरों के लूट के उम्मेद से लश्कर ने आगे डेरा कूच किया। ताहम् रवाना होने के पेश्तर, बसबब बिला तवक़ुफ़ रुपया पाने और खातिरदारी होने के, चीतू ने साहूकारों से इक़रार किया कि आइन्दे की चढ़ाइयों से मैंने तुम्हारा शहर बरी किया, और उसने अपने इस कौल को बखूबी निबाहा। अमरावती पर

फिर कभी लूट न आई बल्कि एक मर्तबः चीतू का भारी गरोह उसी शहर के करीब पड़ा हुआ था और किसी दूसरे छोटे पिंडारी सर्दार ने उस पर हमला करके लूटना चाहा मगर चीतू ने उसे मार भगाया"।

हम लोग आगे बढ़े, मैं अपने गरोह के आगे २ अपने घोड़े पर खुशीबखुशी हवा खाता चला जाता था और तमाम मजमे का एतबार मेरी खुशकिस्मती और चालाकी पर बहुत ज्यादा था। मुझे किसी किस्म का रंज या फ़िक्र न था, और शुक्रखुदा का है कि मुझे उन गांवों या शहरों की बर्बादी न देखनी पड़ती थी जहां मेरे पहुंचतेही लोग नज़र लेकर मौजूद हो जाते जिसे हम अपने शुतरों पर लाद लेते थे, मगर मेरे पीछे चीतू और गफूर खां के साथवाले मुतलक उन पर रहम न करते और बिचारे उन बेकुसूर गांववालों को लूट मार कर उनके मकानात आग लगा खाकस्याह कर डालते थे।

हम लोग करिंजाह में जाकर ठहरे; चन्द सिपाहियों ने जो शहर में थे हमारा मुकाबिला किया बल्कि उन्होंने मेरे चन्द लोगों को शहर में वारिद होते ही ज़ख्मी किया लेकिन वे सब जल्द मारे गये और कुछ भाग निकले; और दूसरों गांवों कि तम्बीह के लिये यह मुकाम लूट मारकर खाकस्याह कर डाला गया। मैं इस किस्म की सख़ संगदिली न देख सकता था इस लिये अपने खेमें को वापस चला आया। थोड़े ही देर बाद देखता क्या हूं कि शहर के मुख़्लिफ़ हिस्सों में आग धधक रही है और धूयें के बादल चारो तरफ़ छा रहे हैं, जिस्से जान पड़ा कि पिंडारियों ने शहर में आग लगा दी। एक तरफ़ आग की तरक्की दूसरे तरफ़ पिंडारियों की लूट मार, कहीं बच्चों का चिल्लाना कहीं बेकस औरतों का खौफ़ के मारे चीख मारना कलेजा फाड़े डालता था। मगर पिंडारी लोग ऐसे काम से खुश रहते थे, सहूलियत और इन्सानियत किस चिड़िये का नाम है वे जानते ही न थे, अगर कोई शख्स उस वक़ उनके इस हर्काते शैतानी में दख्ल दे तो बिलाशक वह अपनी जिन्दगी से हाथ धोवे। मेरे ठग भी तमाम मेरेही पास बैठे थे, क्योंकि ठग लोग बहशी नहीं होते और न ऐसी ज्यादती में शरीक होने की ख्वाहिश रखते हैं।

हम सब चुपचाप बैठे थे, देखते क्या हैं कि एक शख्स किसी निहायत खूबसूरत

नौजवान लड़की को घसीटता और खींचता चला अता है और वह उसकी ज्यादतीयों को हत्तल मकदूर रोकती जाती है मगर अब वह निहायत बेदम हो गई है। मैं फ़ौरन् उसकी मदद के लिये उठ दौड़ा, देखा कि वह तो गफूरखां है और उसका वहशी चेहरा शहवत और गुस्से से और भी खौफ़नाक होरहा है।

मुझे देखते ही उसने कहा 'आहा! मीरसाहब, आप हैं? यह देखिये मैं सच्चे पिंडारी के म्वाफ़िक काम कर रहा था और एक चीज़ काबिलदीद ले आया हूं, म्यां जरा देखिये तो सही, है न खासी परी या हूर के मानिन्द? जब मैं इसके मकान में घुसा इसकी बेवकूफ़ मां मुझे रोकने लगी मगर मैंने तलवार के एक ही हाथ से उसे चुप कर दिया और यह देखिये उसकी खूबसूरत लड़की काबिल नव्वाबों के मेरे साथ मौजूद है कह, मेरी जान! क्या गफूर खां के सीने लगने से तेरी इज्जत दुचन्द न हो जायगी?"

अल्लाह जानता है साहब, मैंने उसे उसीदम मार डाला होता, और यह निहायत आसन बात थी क्योंकि वह गाफिल था। मैंने आधी तलवार खींच ली थी मगर कुछ सोच कर फिर उसे म्यान करदी, मैंने उसीवक्त दिल में उसके खतम करने की खाहिश बांध ली और वैसाही किया। मैंने बहुतेरी कोशिश की कि वह उस लड़की को छोड़ दे मगर वह हँसा और उसे खींच ले गया। एक मर्तबः वह उसके हाथ से छूट कर भाग निकली मगर उसने दौड़ कर उसे फिर पकड़ लिया क्योंक उसके नाज़ुक पैर जमीन की सख्ती से कई जगह फट गये थे, आखिरकार वे दोनों अँधेरे में मेरी निगाह से छिप गये। वह बिचारी ब्राह्मण की लड़की थी, बेहतर हुआ कि उसकी बेइज्जती न हुई वर्नः अगर वह घर भी लौट कर जाती तो बदनामी और बेइज्जती के सिवाय ज़ात से खारिज़ की जाती। दूसरे दिन पूछने पर गफूरखां ने हँस कर जवाब दिया "मीरसाहब वह खुद मेरे तलवार से खुदकुशी किया चाहती थी मगर मैंने आपही उसे तकलीफ़ से रिहाई दे दी।"

पिछली रात कहीं जाकर आग की शिद्दत कम हुई, कोई भी मकान ऐसा न बचा जो थोड़ा बहुत न जला हो, मगर शब के सन्नाटे में चिल्लाहट की आवाज़ से मालूम होता था कि अब तक पिंडारी लोग अपना ज़ोरोज़ुल्म करही

रहे हैं। मैंने सुना था कि ऐसे २ जुल्म हुआ करते हैं मगर मुझे उनके सख़्ती का मुतलक गुमान न था। हज़ारों मर्तबे मेरा इरादा होता कि मैं लश्कर को तर्क कर मकान का रास्ता लूं मगर इस लिहाज़ से कि मेरे चन्द सवारों को, जो अपने भटकने की कोई खास वजह नहीं बयान कर सकते, देखकर मुलक के लोग पिंडारियों का गुमान कर उन्हें जरूर गुस्से में इस वक़्त टुकड़े२ कर डालेंगे; फिर नये २ मुल्कों के सैर का शौक़ और याफ़्त की लालच मेरे उस ख्याल को दूरकर देती थी। बारिश भी होने लगी और हम सब अपने उसी छोटे खेमे में घुस बैठे और किसी तरह बमुश्किल रात बिताई। सुबह होतेही लश्कर रवाना हुआ और कस्बक़ करिंजाह का शहर तमाम तबाह हो गया।

हम लोग मंगरूल से आगे बढ़े, शहर के बाहर रौशनी में दिन के वक़्त मुझे उस मुक़ाम के देखने का मौका मिला जहां मेरा औव्वल शिकार मारा गया था। मुझे गुमान था कि जिस मुकाम पर यह कार्रवाई हुई थी वह घने जंगल के बीच में है क्योंकि माहताब की रौशनी में ऐसा ही नज़र आता था, मगर दरहक़ीकत ऐसा न था वह दर्य्या ठीक वैसाही था जैसा कि हमारे गुज़रते वक़्त नज़र आता था, मैं चलते२ ठीक उस मुकाम पर जाकर ठमक गया जहां वह साहूकार गिरा था। दर्य्या किनारे थोड़ी सी झाड़ियां लगी थीं, और पीरखां ने एक तरफ़ ऊंचे टीले पर इशारे से बतलाया। यह वह मुकाम था जहां वे लोग दफन् किये गये थे, अब मालूम हुआ कि वह मुकाम ऐसे बनिज के दफन् करने के लिये हर्गिज़ महफ़ूज़ न था। वह मुकाम चलती सड़क की निहायत नजदीक और लोगों की निगाह से बहुत कम छिपा था। लेकिन उन्हें उस आरामगाह में सोते बरसों बीत गये, या तो साल दर साल के बरसात से उनकी खाक धो गई या ज्यादातर बालू के गहिरे में नीचे दब गई होगी।

हम अब उस मुक़ाम से भी आगे बढ़े जहां हमारे ठगों की गरोह मुक़ीम होकर दो हिस्सों में तकसीम हुई थी; अब हम आगे नये मुल्कों में पहुंचे जो उस शहरों से कई बातों में मुख़्तलिफ़ थे।

हम लोग बासिम में जाकर ठहरे और मुझे यही खौफ़ था कि कहीं ये पिंडारे फिर कलरात की सी वार्दात न करने लगें, मगर मुझे यह देख कर

हैरत हुई कि वे सब सीधे और बाकायदा थे। शहर से चन्दा भी अच्छा वसूल हुआ और वह तबाही से बच गया। यहां से रवाना होकर पांच मंजिल बाद हमलोग गोदावरी के किनारे नंदेर नामी मशहूर शहर में पहुंचे, यह मुकाम भी निहायत दौलतमन्द था और यहां भी हमारी फ़ौज को अमरावती के म्वा-फ़िक उम्मेद थी। हमें इस बात का खौफ़ था कि हमारे आने की खबर पातेही साहूकार और दौलतमन्द लोग शहर छोड़ कर भाग जांयगे मगर नहीं, वे सब पूरे तौर से हमारे ज़ेरसाये हो गये, एक भी सिपाह फाटक पर मुकाबिले के लिये न था। चन्द लोग जो मौजूद थे वे सब एक पुराने किलेमें जो दरियाके बाका है और जहां से लोग पाप्यादे गुज़र सकते हैं जाछिपे। उन्होंने मुतलक अपनी शकल न दिखलाई, फ़कत कभी २ जब हमारे फ़ौज का कोई शख्स किले के बहुत नज़दीक जा निकलता तो वे दो चार बार पत्थरकले की कर देते थे, हमने उन्हें वहीं छोड़ दिया और जहां तक हो सका ज्यादा रुपया वसूल करने के काम में मशगूल हुये।

पेशतरही के मानिन्द हरावल मेरे सुपुर्द था और मैंने यहां भी वही अम-रावतीवाला तरीका निकाला।

साहब, कुछ ज़रूरत नहीं कि मैं फिर वही पुराना किस्सा सुना कर आप का वक्त ज़ाया करूं, फ़कत इतनाही अर्ज़ कर देना काफ़ी है कि डेढ़ लाख रुपया तो फौज के देने के लिये जमा किया गया, मैंने अपने हिस्से का करीब तीन हज़ार नगद, कुछ जवाहिरात और एक जोड़ा दुशाला पाया। शहर बर्बादी से माफ़ किया गया, क्योंकि बसबब पक्के मकानातों के यह गैरमुम्किन था, अगर आस पास के बाशिन्दों को ज्यादा नुकसान पहुंचा, खास कर उन बद-बख्त जुलाहों के तमाम मकानात जला दिये गये जिनकी कारीगरी के लिये यह मुकाम मशहूर है—दूसरे दिन मैंने देखा तो अनकरीब आधे फौज के नये दस्तार और ताज़े कमरबन्द नज़र आते थे।

इस मुकाम पर दर्या मुम्किने गुज़र न था, और किश्ती भी फ़कत एकही मौजूद थी, इसलिये हम लोग किनारेही किनारे उत्तर की जानिब गंगाखेर तक चले गये, जहां कि हम लोगों ने सुना था कि कई एक किश्तियां और

घाट भी हैं । शहर दर्य्या के दूसरे किनारे बसा था, जिस रोज़ हम लोग पहुंचे उसी रोज़ शाम होते २ तमाम फौज़ दर्य्या के पार हो गई लूट का माल और असबाब वगैरह तो किश्तियों पर लाया गया और घोड़ों को पिंडारी लोग तैरा कर पार ले गये । दो चार सौ लोगों ने शहर बचाने के लिये मुकाबिले की कोशिश की मगर हमने फाटक तोड़ कर शहर लूट लिया । हमारे चन्द लोग मारे गये और मुझे भी एक गोली से हलकी चोट पैर में लगी जिसके बाइस मैं शहर के लूटने में अच्छी तरह शरीक न हो सका । मगर पीरखां और मोतीराम काहिल न थे, वे लोग शहर से बहुत सा नगद रुपया और जवाहिरात वगैरह लूट लाये ।

यहां से हमलोग दक्खिन की तरफ़ झुके । बीडर, भालकी और हुमनाबाद का सर्सब्ज और गुलज़ार शहर जिसे दूसरी अमरावती कहा चाहिये, सब लूट लिये गये, और जितने छोटे मोटे गांव रास्ते में पड़ते गये सब लूट कर जला दिये गये । हुमनाबाद से ३०० पिंडारियों को साथ लेकर मैं कल्यानी में जा पहुंचा जो वहां से चन्द कोस के फ़ासिले पर था, मगर देखा कि हमारे आने की खबर वहां पेश्तर ही पहुंच गई थी और शहर के तमाम दौलतमन्द लोगों ने किले में पनाह ले ली थी जिसकी मज़बूती के बाइस हम लोग अन्दर दाखिल न हो सकते थे । इस कदर दबदबा हम लोगों का गालिब हुआ कि शहर के मुहाफिज़ दूसरे दिन तक उसी के अन्दर छिपे रहे और हमलोग बाआराम शहर को लूट पाट वापस चले आये ।

इसके आगे पहाड़ की घाटियों से उतरते हुये हम लोग चिंचोली नामी गांव में पहुंचे जिसे लूट लिया और तब सीधे दक्खिन को लूटते मारते रवाना हुये; रास्ते में जो शहर या गांव पड़ते उन्हें या तो लूट लेते या जला देते थे । चलते २ कृष्णा नदी के किनारे पहुंचे और उसके चौड़े पाट के बाइस हमारा रास्ता रुक गया । कुछ दिनों तक लश्कर ने यहीं डेरा डाल दिया । रसद की इफ़रात थी, और किसी के पास रुपये की कमी न थी बस हमलोग अपने खेमे में सच्चे पिंडारियों के मानिन्द लहर उड़ाने लगे । आस पास के मुल्कों से बहुतेरी तवायफ़ें धर ली गईं, उनपर किसी तरह का ज़ोरोजुल्म न कियागया

वे सब भी नांचने गाने से हमें खुश करती रहीं और जब हमारा लश्कर रवाना हुआ तो उन्हें खूब उमदा ईनाम दिया गया और वे सब निहायत अफ़सोस करती थीं कि हम आप लोगों के हमराह न चल सकीं।

इतने दिनों तक यहां मुकाम करने में चीतू की सख़ गलती हुई क्योंकि पिंडारियों के लश्कर उठने की शुहरत तमाम मुल्क में फैल गई थी और गुलबर्गे की लौटती मन्ज़िल में कोई लूट काबिल बयान दस्तयाब न हुई। गुलबर्गे में हमारे मुकाबिले के लिये फ़ौज तयार थी, पस शोलापूर, बरसी और बिरग वगैरह दौलतमन्द शहरों को छोड़ हम लोगों ने भीर, पैतून और औरंगाबाद का रास्ता लिया इस उम्मेद से कि इस आखिरी शहर में ज्यादा माल दस्तयाब होगा।

मगर बरसी और बिरग पर हम्ला करने का मेरा मुसम्मम इरादा था और मैंने अपनी ख़्वाहिश चीतू के रूबरू ज़ाहिर की। उसने भी मेरी दर्ख़ास्त मंज़ूर की मगर गफ़ूरख़ां को यह बात सख़ नापसन्द हुई; पस तीन सौ उमदे और चुनिन्दे सवारों को हमराह ले और अपनेही ठगों के मातहत तीन दफ़ा कायम कर, मैं असल गरोह को अलुन्द के शहर में छोड़ तुलजापुर की तरफ़ झुका जहां से नीचे के मुल्कों का रास्ता पड़ता है।

तुलजापूर में सिवाय भवानी के मन्दिर के और कोई चीज़ काबिल बयान नहीं है, यह हिन्दुओं के यात्रा का मुकाम है गोकि मैं बखूबी वाकिफ था कि पंडों के पास जवाहिरात वगैरह दौलत बेशुमार है मगर चूंकि मेरे गरोह में हिन्दू ज्यादः थे कोई भी मन्दिर के लूटने में राज़ी न था इसलिये मुझे लाचार हो कर बाशिन्दों से तीन चार हज़ार रुपया वसूल कर आगे चलना पड़ा।

अब हमारा इरादा बिरग की तरफ़ हुआ और हम कामयाब भी हुये। हमारी गरोह को लोगों ने महरठा सवारों का एक रिसाला समझा जो उस ज़िले में मुकीम था, पस इसी ख्याल से शहर में वारिद होते वक़ किसी ने भी हमें न रोका। हमलोगों ने जातेही शहर लूट लिया क्योंकि चन्दा जमा करने का वक़ न था। जो सच पूछिये तो मैंने इसका ख्याल ही न किया क्योंकि उस लम्बी मंज़िल मारने के बाद मैं हर्गिज़ अपने लोगों को रोक न

सकता था। ताहम् उन लोगों ने कोई संगदिली या ज़ुल्म न किया और न मैंने कोई ऐसी शिकायत सुनी बल्कि जहां जहां वे जाते शहर के बाशिन्दे उन्हें फ़ौरन् बेशक़ीमत ज़ेवर वगैरह देकर आसूदा कर देते थे। यहां हमलोगों ने सुना कि जिस रिसाले का धोखा बाशिन्दों को हुआ था वह बरसी में मुक़ीम है और चूंकि वह मुकाम भीर के सीधे रास्ते में पड़ता था जहां असल गरोह से मुलाक़ात होने वाली थी, मैंने उधर से जाने का क़स्द तर्क कर दिया; यह भी सुनने में आया कि पुरेण्डाह में नीज़ाम के सवारों का एक भारी रिसाला पड़ा हुआ है और मुझे खौफ़ हुआ कि उधर से जाने में शायद हम लोग काट दिये जांय। इसलिये जिस राह से आये थे उधरही से वापस आने का इरादा क़ायम हुआ, और चन्द घण्टे आराम करने के बाद हमलोग फिर घोड़े की पीठ लगे और जितना जल्द हो सका तुलजापूर की तरफ़ रवाना हुये। साहब उस दिन मेरे घोड़े ने बड़ी हिम्मत की, बहुतेरे लोगों ने अपने २ घोड़ों को अफ़ीम खिलाई ताकि उन्हें थकावट की हरारत मालूम न हो मगर मेरे हिम्मतवर घोड़े को इसकी मुतलक़ ज़रूरत न थी, वह तुलजापुर पहुंचने पर वैसाही तरोताज़ा था जैसा रवाना होने के वक़्त खुश व खुर्रम नज़र आता था।

यहां हम लोगों ने एक रोज़ आराम किया और फिर वहां से रवाना हो कर असल गरोह से भीर में जहां उन लोगों का खेमा खड़ा था आ मिले। गोकि मैं अपने क़स्द में पूरी तौर से कामयाब न हुआ ताहम् जिस वक़्त मैंने दर्बार आम में दस हज़ार रुपये नक़द और उतने ही का जवाहिर चीतू के नज़र किया कि बन्दा इस क़दर हुज़ूर के लिये लूट लाया है उसने मेरी निहायत इज़्ज़त कर उसी वक़्त खिल्लत अता की और खास अपने सवारी में से एक अस्प मुझे ईनाम दिया।

पैंतीसवां पर्व्व।

दो रोज़ तक भीर में लूट ज़ुल्म और ज़्यादती होती रही और जब हम वहां से रवाना हुये बाशिन्दों के पास चीथड़े तक भी न बचे। उन्हें देख कर

निहायत तर्स आता था कि क्योंकर वे बिचारे रात की सर्द हवा से जान बचाने के लिये अधजली लकड़ियों को जमा कर छोटी मोटी झोंपड़ियां बना उन्हें दरख्तों के सब्ज़ शाखों से छा रहे थे। उन्होंने चुपचाप शहर की बर्बादी बर्दाश्त कर ली क्योंकि उसकी हिफ़ाज़त के लिये कोई सिपाह मौजूद न थे, और अगर होते भी तो हमारे जैसे हथियारबन्द बहुशी फौज के मुकाबिल क्या कर सकते थे।

पैतून नामी शहर की, जो गोदावरी के किनारे वाके है, वही हालत हुई और गोकि बहुतेरे दौलतमन्द बाशिन्दों ने औरंगाबाद में भाग कर पनाह ली तौभी हमारे कार के लिये काफी बच गये थे। शायद आप जानते होंगे कि बनारस के नीचे यही शहर किमखाब की कारीगरी के लिये मशहूर है और उस वक्त पूना और हैदराबाद के दर्बारों से किमखाब की बहुत मांग थी। इसलिये आप गुमान कर सकते हैं कि हम लोगों ने किस कदर लूट का माल पाया होगा। चीतू के शुतर और फील जहां तक उठा सके लाद दिये गये, हम लोगों में से कोई भी बुरा न रहा, और खुद हमाराही बेशकीमत असबाब इसकदर बढ़ गया कि हमें हर्गिज़ उतनी उम्मेद न थी। साहब ज्यादातर बारीकी के साथ बयान करने की कोई ज़रूरत नहीं, फ़कत इतनाही कह देना काफ़ी है कि हम ऐडजुण्टाह घाट से आगे बढ़े लेकिन यहां फिरंगियों ने हमारा सख्त पीछा किया मगर हमलोग हमेशा बसबब अपनी तेज़ी के उनसे दो एक मंज़िल आगेही रहते थे। और बादजाँ बुरहानपुर पर थोड़ा हमला करने के हमलोग तापती की तराई से होते हुए चन्द दिनों के बाद सही सलामत निमावड़ में पहुंच गये।

तीन महीने से कुछ ज्यादा दिनों में हम लोग नीजाम की रियासत के तमाम दौलतमन्द हिस्सों को छान आये। हमेशा उसकी और फिरंगियों की फौज को बचाजाते और उनकी आखों में धूल झोंक देते थे उसका तमाम मुल्क हम लोगों ने लूट लिया और वह हमारा कुछ भी न कर सका, जहां तक हम लोगों से हुआ बेशुमार दौलत लूट कर वापस आये। यह लूट का माल इस कदर ज्यादा था कि निमावड़ के साहूकारों से जहां तक खरीदते बना

खरीदा मगर अब उनके पास काफी रुपया न था कि वे हमारा कुल माल ले सकें। यह खबर सुन कर उज्जैन, इन्दौर और गिर्दोनवाह के नामी शहरों से बेशुमार सौदागर लोग निमावड़ के बाज़ार में टूटे और जहां तक बना माल खरीद ले गये।

कुछ दिनों के बाद तमाम माल फ़रोख़ हो गया और हर शख्स लूट की आमद के साथ अपने २ मकान जाने की तैयारी करने लगा। यह कहना फ़ज़ूल है कि क्योंकर मेरा दिल अज़ीमां के देखने और उसके रूबरू ये दौलत कसीर गुज़ारने के लिये फड़क रहा था। मुझे इस बात का निहायत शौक था कि वह मेरे इस चढ़ाई और बहादुरी का हाल सुन कर निहायत खुश होगी। पस मैंने और मेरे साथियों ने जहां तक हो सका सोना खरीद लिया और दो तेज़ शुतुर भाड़े कर उन पर बेशकीमत कपड़े वगैरह जो हमने अपनी इस्तियामाल के लिये रक्खा था लादकर यह इरादा किया कि चीतू के दर्बार से छुट्टी पाने के बाद जालौन की तरफ रवाना होंगे, यह कोई आसान बात न थी क्योंकि मैंने चीतू की खिदमत बाईमान बजाई थी और उसे भी मेरी अक्लमन्दी और चालाकी पर ज्यादातर एतकाद था इसलिये वह मुझे रुखसत देना न चाहता था इस खौफ़ से कि शायद मैं फिर उसके लश्कर में वापस न आऊं।

दूसरे दिन जब मैं उससे छुट्टी लेने गया वह मेरी रुखसत की नज़र मंजूर न करता और न मुझे रुखसती का इत्र व पान जो ऐसे मौकों पर दस्तूर है देता, पस मैं निहायत रंज के साथ गर्दन झुकाये दरबार में बैठा था कि शायद मेरी इस खिदमतगुजारी के एवज़ मुझ से दगाबाज़ी का इरादा हो। मगर मेरा यह ख्याल फ़ासीद निकला। जब चन्द लोग रह गये चीतू ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा "मीरसाहब मुझे आप से कोई निहायत मुफीद व जरूरी मश्विरा करना है इसलिये आज शब को करीब एक या दो बजे तक जरूर तशरीफ़ लाइयेगा"।

मैं अपने डेरे को अच्छी उम्मीद से वापस आया मगर फिर भी मुझे शक बनाही रहा कि शायद चीतू मेरे साथ दगाबाज़ी करे। अनकरीब था कि मैं

पीरखां और मोतीराम की सलाह मान कर भाग जाऊं जैसी कि उन्होंने मुझ से कहा था कि अपनी दौलत बचाने का फ़क़त यही तरीक़ा है । मुझे चीतू पर कुछ २ एतबार था, मगर मैंने यह इरादा कर लिया कि अगर वह मुझे और रोकेगा या देर लगावेगा तो जैसे बनेगा मैं निकल भागूंगा ।

खैर, मैं वक़्त मुक़र्र्‌र पर करीब १ बजे रात के हाज़िर हुआ देखा कि चीतू अकेला बैठा है । गोकि मुझे दर्बार में जगह मिलती थी और कई मर्तबः मेरे सलाह के म्वाफ़िक़ कार्रवाई भी की गई मगर अब तक मुझे यह इज़्ज़त न मिली थी कि मैं उससे अकेले में गुफ़्तगू करूं । मुझे कुछ भी समझ न पड़ता था कि क्या होगा और क्यों इस वक़्त अकेले में मुझे उसने बुलाया है ।

चीतू ने कहा "मीरसाहब बैठ जाइये मुझे आप से बहुत कुछ बातें करना है" ।

मैंने कहा "बशौक़ इर्शाद फ़र्माइये ताबेदार हाज़िर है और हुज़ूर का फ़र्माना यह गुलाम बसरोचश्म बजा लावेगा" ।

उसने कहा "तो सुनिये, मगर अव्वल तो मैं आप से यह पूछता हूं कि आपने मेरे इस चढ़ाई करने का क्या मतलब समझा ?"

मैंने कहा "मतलब जो आप पूछते हैं तो बन्दः यही ख़्याल करता है कि हुज़ूर की चढ़ाई से खास गर्ज़ यही थी कि जहां तक मुम्किन हो अपने और अपने आदमियों के लिये नक़द रुपया वसूल किया जाय ताकि जिस वक़्त इन कम्बख़्त फिरंगी और मरहटों में जंग हो उसका फ़ायदा उठाया जावे, और तो कोई ऐसी गर्ज़ बन्दे के ख़्याल में नहीं आती गोकि इस खादिम ने खुद भी बहुत गौर किया और दूसरों की राय भी सुन चुका है" ।

उसने कहा "आप का कहना कुछ २ सही है मगर बिलकुल नहीं, अब आप तमाम हाल सुनिये कि आइन्दे के लिये मेरी क्या २ बंदिशें हैं" मैं निहायत अदब सुनने का मुश्ताक़ हो बैठा और जो कुछ वह कहता गया उसे ग़ौर से सुनता गया ।

उसने कहा "मीरसाहब आपकी निगाह ज़माने के हाल वो वक़्त की खूबी पर बहुत ज़्यादा है और यही मुझे आप से उम्मेद थी आपने सुना होगा कि

हजरत टीपू सुलतान ने जिसे खुदा बिहिश्त में राहत बख्शे नीज़ाम और तमाम महराठा लोगों को एकही में मिला के चाहा था कि फिरंगियों को निकाल कर उनका नामोनिशान इस मुल्क से मिटा दे। अगर उसका यह इरादा कामयाब हुआ होता तो उसने बेशक वैसाही कर दिखाया होता मगर अफसोस! उसकी तमा पर है! अन्दरही २ उसका यह इरादा था कि महराठा और नीज़ाम में रश्क पैदा हो जाय, अल्लाह जाने यह बात क्योंकर ज़ाहिर हो गई और खुदा की मार इन फिरंगियों की खुशकिस्मती पर कि इन्होंने उस एकही रहते सहते मुसलमानी पादशाहत को भी तबाह कर डाला जिसने दीन मोहम्मदी का रुतबा हिन्दुस्तान में कायम रखा था; अब टीपू सुलतान जाता रहा और उसकी हश्मत और ताकत भी उसी के साथ गई। शायद आप को यह बात मालूम नहीं है कि इस वक्त बावजूद इसके कि होलकर में मुतलक ताकत न रही और सेंधिया ने भी लाचार हो कर फिरंगियों से सुलहनामा मंजूर कर लिया ताहम तमाम महराठा रियासत में एक दिली इत्तिफाक कायम होरहा है खास कर पूना और नागपूर के रियासत में, ताकि फौरन् इन लालची और गैरआसूदः फिरंगियों के बर्खिलाफ मिलकर जंग किया जाय—

सिकन्दरजाह फिरंगियों से मिल जायगा न कि इसलिये कि वह कुछ कर सकता है क्योंकि उसकी फौज़ निहायत बेसिलसिला है और उसके सरदारों में होशियारी और दिलेरी का नाम भी नहीं है ताहम वह उनसे अजहद दोस्ती निबाहेगा। उसने अपनी रियासत अंग्रेजों की फौज़ के आने जाने और मदद के लिये खोल रक्खी है। मेरी आखिरी चढ़ाई से जो अल्लाह की फज़ल से कामयाब हुई यह गर्ज़ थी कि सिकन्दरजाह के मुल्क को ग़ारत कर दूं और उसकी रिआया के दिल में हमेशा खौफ ग़ालिब रक्खूं और साथही अपना हाथ भी खूब गर्म करूं।

अब और सुनिये। ताकि मेरा मतलब बखूबी हासिल हो और अंग्रेजों का ख्याल महराठा लोगों की तयारी से बरगश्त हो जावे यह निहायत ज़रूरी अम्र है कि मेरी चढ़ाइयां लगातार एक दूसरे के बाद होतीही रहें ताकि उनका असर कायम रहे, हुजूर का आधा मुल्क तो तबाह होगया आधा बचा है इनशा

अल्लाह इसकी भी वही हालत होगी, फिरंगी लोग हमेशः खौफ खाते रहेंगे वे लोग बेफायदः हमारा पीछा मुकाम दर मुकाम करते फिरेंगे मगर मैं उनसे मुतलक खौफ नहीं खाता ।

मैं एक मर्तबः उन्हें छका चुका हूं और फिर भी ऐसाही करूंगा ताकि उन्हें भी मालूम हो कि चीतू पिंडारी भी कोई शख्स है । न की सिर्फ नीज़ाम की रियासत ही तकलीफ उठावेगी बल्कि फिरंगियों का दौलतमंद मुल्क भी बरबाद किया जायगा । मैं दरियाये-कृष्णा के पार उतरूंगा और वे तमाम मुल्क जहां उनकी फौज अभी तक नहीं पहुंची है मेरी फौरन् इतायत मंजूर करेंगे। इसतरह उनकी आमदनी जाती रहेगी और कोशिश नाकामयाब होगी तब महरठों का हर एक शख्स लड़ने को मुस्तैद हो जायगा । मैं उनसे जा मिलूंगा क्योंकि उन्होंने अपनी फौज में मुझे भारी जगह देने का इकरार किया है और यह भी कहा है की बादजां फतहयाबी के मुल्क भी दिया जायगा। उस वक्त मीरसाहब हमलोगों की तरक्की होगी; यह मौका हमलोगों के तरक्की करने का है इनशाअल्लाह हमलोग इस मौके पर वह नाम हासिल करेंगे जिसका अहवाल जमाना आइन्दे के लोग सुन कर ताज्जुब करेंगे।"

मैंने कहा "हुजूर की बान्दिश निहायत उमदः और गहिरी है । मैं इसमें कोई नुकसान नहीं देखता मगर क्या हमारी शक्ल देखते ही फिरंगी लोग हमारे मुकाबिले के लिये तयार न होंगे ?"

"नहीं नहीं" उसने कहा "हर्गिज़ नहीं, चूंकि वे अपने को चालाक लगाते हैं मैं हमेशः उनसे एक या दो मंज़िल आगेही रहूंगा। अब वे समझते हैं कि हम लोग लूट से आसूदा होकर आराम करेंगे और बेवकूफ बन कर आइन्दे दशहरे तक कोई चढ़ाई न करेंगे, मगर यह उनकी गलती है और यही मेरा भेद है जो मैंने आप से ज़ाहिर किया। दरबार में मैंने आम तौर से इस बात को इसलिये न कहा था कि शायद कोई बकी मकान जा कर इसका ज़िक्र छेड़ बैठे तो यह खबर हवा की तेज़ी के मानिन्द अन्दर एक हफ़्ते के तमाम मुल्क में फैल जायगी, इसलिये सिवाय अपने चन्द अफ़सरों के जिन में से हर एक के मातहत एक एक हज़ार आदमी हैं मैंने यह बात किसी पर ज़ाहिर नहीं की । सुनिये रहमत-

अल्लाह से मेरा यह पक्का इरादा है कि अर्सा दो माह में मैं यहां से ऐसी फौज लेकर चढूं जो आगे से कहीं ज्यादः हो, कहिये आप आइयेगा? मैं आप को एक हज़ार सवार की अफ़सरी दूंगा क्योंकि मैं आप से मोहब्बत रखता और आपही पर ज्यादः एतकाद करता हूं। आप क्या उस वक्त तक जालौन से वापस आ सकेंगे? मेरी ख्वाहिश नहीं है कि मैं आप को रोकूं, हर एक बशर को अपना मकानप्यारा है और वाजिब है कि आप भी अपने मकान को जाइये मगर मुझ से फकत इतनाही कह जाइये कि आप दो महीने के अन्दर मुझ से आ मिलेंगे और मैंने भी जो कुछ आप से इकरार किया है उसे पूरा कर दिखलाऊंगा"।

मैंने कहा "ताबेदार ज़रूर हाज़िर होगा, अगर हुजूर की योंही निगाह मिहर्बानी बनी रहेगी तो गुलाम बहुत कुछ तरक्की करेगा। मैं इकरार करता हूं कि चाहे मुझे शबो रोज़ चलना पड़े मगर मैं चन्द लोगों को हमराह लेकर दो महीने के अन्दरही हुजूर की खिदमत में वापस आऊंगा"।

चीतू ने कहा "जितने ज्यादा लोग आप ला सकें बेहतर है, मेरे अस्तबल से अगर आप चाहें तो सब से उमदा घोड़ा ले लेवें, आप से बढ़ कर इनका कदरदान और कौन होगा, और चूंकि आप को शुतरों की भी ज़रूरत पड़ेगी, जितने दर्कार हों उतने तेज़री शुतर ले लीजिये। उन पर बोझा कम लादियेगा और वे बराबर आप के साथ चले जांयगे। अब आप तशरीफ़ ले जाइये, मैं निहायत थका हूं और आराम किया चाहता हूं, मैं ख्याल करता हूं कि कल सुबह पौ फटने के वक्त आप रवाना हो जांयगे, बस बिस्मिल्ला कीजिये खुदा हाफिज़ है।"

मैंने झुक कर बाअदब सलाम किया और खुशी बखुशी अपने दोस्तों में आ मिला। मैं खूब जानता था कि उनसे कहने में कोई हर्ज नहीं है और जिस वक्त मैंने चीतू की यह गहिरी बख्शिश उन्हें सुनाई उन सबों की आंखें खुल गईं और सबके सब उसकी होशियारी और दूरन्देशी की तारीफ़ करने लगे। सभों ने कसम खाई कि हमलोग मरते जीते हर तरह आप के साथ हैं। पस दूसरे दिन सुबह को हमलोग खुशी बखुशी रवाना हो पड़े और हमारे घोड़े भी हर रोज़ कोसों की मंजिल मारते उड़ते चले जाते थे। जितने रोज़ हमें आते लगे थे

उससे कहीं कमती दिनों में हम सब एक बयक अचानचक जालौन जा पहुंचे और जिस वक़ में अपनी दहलीज़ डांक घरके अन्दर पहुंच अजीमां से बगलगीर हुआ उस वक़ की खुशी का बयान आप से क्या अर्ज़ करूं, जुबान में ताक़त नहीं कि मैं किसी तरह उसे बयान कर सकूं । जिस वक़ मैं अज़ीमां के पास बैठ अपने छोटे खूबसूरत लड़के का खेलना देखता मेरा दिल अन्दर से भर आता और मैं ज़ुबान से बोल न सकता था। मेरे वालिद भी निहायत खुश हुये, मगर हमलोगों को किसी कम्बख़ की नज़र लग गई। हमारा खुशी का प्याला होठों तक पहुंचने को था कि गिर कर चूर होगया। यह कम्बख़ नज़र उसी राजा की थी मगर खैर इसका ज़िक्र मैं आगे चल कर करूंगा ।

मैंने उसे फ़रामोश न किया, आतेही उसके घोड़ों की क़ीमत इक़रार के मुताबिक़ चुका दी और एक किश्ती में ५१ मोहर एक लड़ बड़े २ मोतियों की और चन्द बेशक़ीमत किमख़ाब के थान जो पैतून की लूट में दस्तयाब हुये थे, रख कर उसकी नज़र की। किसी को ख्याल होगा कि इतना बहुत है मगर नहीं वह मुतलक़ दिल से आसूदा न हुआ ताहम मुस्कुराहट के साथ उसने मेरा शुक्रिया अदा किया, मुझे एक खिल्लत अता की गई और उसने मुझे तख़-लीये में बुला कर आइन्दे के लिये खूब हिम्मत दिलाई । अफ़सोस उसने मेरे साथ दग़ाबाज़ी की, सच है किसकी ताक़त थी कि उसके झूठे दिल का थाह पावे ?

चन्द रोज़ बाद मैंने पीरखां, मोतीराम, और दूसरे दो शख़्सों को मुख़्तलिफ़ जानिब में रवाना किया कि जिन ठगों को वे होशियार और उमदा शह-सवार जानते हों उन्हें लूट की उम्मेद दिला कर अपने साथ ले आवें । शहसवारी का वह हुनर है जिसमें बहुत कम ठग होशियार पाये जाते हैं । ताहम दसही रोज़ के अन्दर वे लोग १२ शख़्सों को हमराह लेकर वापस आये जिनमे से चन्द को तो मैं जानता भी था और वे सब दिल के मज़बूत और तलवार या बरछी के इस्तियामाल से खूब वाक़िफ़ थे । मैंने पेश्तरही के मानिन्द इन्हें भी राजा सा-हब के अस्तबल से घोड़े दिलवा दिये और चूंकि उन्हे दूनी क़ीमत से भी कुछ ज्यादा पड़ गया था अब तो वे अपना तमाम अस्तबल ही उस शर्त पर देने को

को रज़ामन्द थे । मैंने उनके हथियार वगैरह बखूबी देखे और जो नाकारे थे उनके एवज़ नये और तेज हथियार दिलवा दिये । हमारे ज़ीन वगैरह भी सब नये थे और जहां तक हमारा तजरिबा था हमनें पहिली चढ़ाई से बहुत ज्यादा बढ़ कर चलने की तयारी की।

मगर घर का आराम देखने के लिये मुझे बहुतही कम वक़्त था और अब घर पहुंचने पर मेरी खाहिश उसे छोड़ने की न करती थी। दौलत मेरे पास बहुत और बरसों के लिये काफ़ी थी और अब मैं ऐसी हालत में था कि अगर मैं चाहता तो राजासाहब की रियासत में कहीं तहसील वगैरह के इन्तिज़ाम में भारी दर्जा पा जाता। ताहम् मुझे नये नये मुल्कों के सैर का शौक लगाही था और सब से भारी बात तो यह थी कि मैं चीतू को ज़ुबान दे चुका था जिस्से फिर जाना मुझे हर्गिज लाज़िम न था, फिर वह एक हज़ार सवारों की अफसरी का इकरार भी तो मुझ से कर चुका था । मेरे निगाह में इसके बेशुमार फ़ायदे मालूम हुये और मैंने ख्याल किया कि अगर चीतू की बन्दिश कामयाब हुई तो फिरंगी और नीजाम के शिकस्त पाने पर उनकी तमाम रियासत मरहठे लोग अपने सर्दारों में तकसीम कर देंगे, उस वक़्त मैं अपनी कोशिश से चाहे जिस कदर तरक्की कर सकता हूं। इन ख्यालातों के बाइस मैं और भी जल्द रवाना हुआ, पस अपनी प्यारी अज़ीमां को हिज्र में छोड़ वालिद की दुआ ले मैं चलता हुआ और रवानगी के वक़्त राजासाहब ने निहायत खुशदिली के साथ मुझे एक तलवार बख्शिश करके यह फ़र्माया कि मैं चाहता हूं कि तुम्हे हरकिस्म की कामयाबी हासिल हो और तुम सहीसलामत अपने मकान को वापस आओ।

कुछ दिनों बाद मैं चीतू के पास जा पहुंचा जिसने निहायत खुशी से मेरा इस्तकबाल किया। मैंने देखा कि वह चढ़ाई की तयारी में सख़्त मशगूल है। इस अर्से तक उसके पहिले चढ़ाई के बेशुमार लूट की धूम तमाम मुल्क में चारो तरफ फैल गई थी इसलिये हजारहां शख्स निमावड़ में इस उमैद से जमा होते चले जाते थे कि वे भी चीतू के गरोह में अपना नाम लिखा कर इस चढ़ाई में शरीक हों, पस हररोज सैकड़ोंही सवार नये चले आते और भरती होते जाते थे। साहब यह निहायत मुशकिल काम था कि मुखतलिफ़ कौम और मुखतलिफ़

लोगों की भरती वाजिब सर्दारों के मातहत की जाय; चीतू ने इस बारे में मेरी मदद चाही और मैंने भी बखुशी मदद दे कर उसका काम अंजाम किया।

यह कोई आसान बात न थी क्योंकि हर एक शख्स खुदमुख़ार होकर काम किया चाहता था मगर इस से चीतू का इरादा हल् न होता था। गोकि उसका खास मतलब लूट मार का था ताहम वह इस चढ़ाई को औव्वल की बनिस्बत ज्याद:तर सिलसिले से किया चाहता था, गफूरखां भी मौजूद था मगर उसे तो शहरों का जलाना और बेकुसूर लोगों को तकलीफ देना ही पसन्द था और उसकी यह खाहिश पेश्तर के बनिस्बत बहुत ज्याद: हो गई थी। गोकि उसका और मेरा ज़ाहिरा आपस में मेल था ताहम मुझे करिंजाह के शब की वारदात न भूली थी और उस बेचारी हिंदू लड़की का सदमा और मारा जाना अब तक मेरे दिल पर तरोताज़ा था। मुझे पूरा एतकाद था कि वह अपनी इस जुल्म की आदत से बाज़ न आवेगा, फ़क़त मैं इसी बात का मौका देख रहा था कि किसी वाजिब कुसूर में इसका काम साथ इन्साफ के तमाम करूं। मैंने यह इरादा कर लिया था कि जब तक ऐसा मौका दस्तयाब न हो मैं उससे ज्यादतर रब्त ज़ब्त बनाये रहूं ताकि उसे मुझ पर ज्याद: एतकाद रहे।

अब हमारी तैयारी खतम हुई। १०००० उम्द: सवारों के नाम फेहरिस्त में दर्ज हुये और उनके साथियों का शुमार कौन कर सकता था, मैं न जानता था कि क्योंकर वे सब अपने खर्च पर अपना गुज़ारा करते थे पर ताहम उनकी यही हालत थी सब के सब हमारी गरोह में खुश ओ खुर्रम नज़र आते आखीर कार्रवाई यह हुई कि चीतू ने तमाम मौजूद: सरदारान् और अफ़सरान् का एक आम दर्बार किया और उन्हें अपना इरादा कह सुनाया जिसका खुलासा यों था कि राजा नागपूर की रियासत से होते हुये दक्खिन और पूर्व के जानिब चलना चाहिये और गुड़वाना के जंगल वगैरह से गुजरते हुये मुसलीपट्टम के उत्तर तरफ हम्ला करना चाहिये वहां से दरियाये कृष्णा के पार होकर करनूल तक लूट मार कर जो उम्द: रास्ता मिले निमावड़ वापस आना चाहिये। इस बन्दिश को हर एक ने दिलोजान से तारीफ़ की और जिस वक्त यह खबर बाहर फौज में पहुंचो तमाम आसमान खुशी के आवाज़ से गूंज उठा। साहब

यह निहायत जोश का मौका था और हर एक सर्दार मारे खुशी के चीतू से यही अर्ज करता था कि अब रवानगी का हुकुम दीजिये । तमाम फौज इसी इन्तिज़ार में थी, पस चीतू ने उसी दम हुक्म दिया की कल शाम के पेश्तर तमाम फौज़ नर्बदा के पार हो जावे ।

छत्तीसवां पर्व्व ।

सब से औव्वल मैं अपने हज़ार आदमियों को साथ लेकर दर्य्या से पार उतरा जो अब हल जाने के काबिल हो गया था, और हम लोगों ने उसके दूसरे किनारे ठीक उसी मुकाम पर डेरा खड़ा कर दिया जहां पांच महीने पेश्तर हमारी इससे आधी फौज पड़ी थी । मैं इसका ज़िक्र आप से कुछ नहीं करता कि क्योंकर हम लोग राजा नागपूर की रियासत से होते हुये उस जंगल बयांबान से गुज़रे कि जहां इन्सान का कदम शाज़ोनादिर पड़ा हो । अकसर हम लोगों को पानी की सख़ तकलीफें उठानी पड़तीं मगर हर एक शख्स साथ जवां मर्दी के उन तकलीफ़ और मुसीबतों को बर्दाश्त करता गया, आखिरकार हमारी फौज उत्तरी सिरकार के ज़रखेज़ मैदान में पहुंची और सब हमारे मातहत हो गये । किसी पर भी रहम न किया गया और हमारी फौज ने कोसों तक का मुल्क जो आगे पड़ता गया लूट मार कर तबाह कर डाला ।

हम लोग हर रोज़ दस या पन्दरह कोस के हिसाब से आगे बढ़ते ही गये; न तो दर्य्या से रुकते और न पहाड़ से बाज आते थे, जहां जा पड़ते दर्य्या का दर्य्या सोख जाते । हमारे मुकाबिल के लिये कहीं फौज न थी और अगर होती भी तो हमलोग उन्हें पैरों से कुचल डालते। ताहम् हमारी खाहिस किसी से जंग करने की न थी क्योंकि इससे हमारा कोई मतलब न था । अगर कहीं सख़ मुकाबिले की खबर सुनते तो अपना रास्ता तबदील कर देते थे क्योंकि आप ही ख्याल फर्मावें कि चाहे हम फतहयाब भी होते ताहम् क्या फायदा था कि नाहक जंग करके अपने चन्द लोगों की जान गवाँ आइन्दे की कार्रवाई में नुकसान पहुंचाते ।

चन्द रोज़ बाद हमलोग गंटूर जा पहुंचे जहां हम पता पा चुके थे कि मालगुजारी का रुपया जमा किया गया है। इसके लूटने का इरादा चीतू के दिल में पेश्तरही से लग रहा था क्योंकि उसने सुन रक्खा था कि वहां कई लाख रुपया इन नामाकूल फिरंगियों ने जमा कर रक्खा है। मेरे लोग शैतान की मानिन्द ललकारते और शोर मचाते हुये शहर में जा टूटे। उन्हें रोकना नामुमकिन था मगर मैंने इस बात को कोशिशही न की। तमाम अंगरेज अफसर उस मकान में जा छिपे जहां खज़ाना जमा था और उनकी निगाहों के रूबरू हमने तमाम शहर लूट लिया, मगर उन्होंने निहायत बहादुरी से उस खजाने की हिफाज़त की। ज्योंही हमारा कोई पिंडारी उस मैदान में नज़र आता कि गोली का निशाना हो जाता, गोकि मैंने चीतू से बार बार दर्खास्त की कि आप अगर हुक्म दें तो मैं अपना रिसाला लेकर उन पर हमला करूं मगर वह हर्गिज़ न सुनता था उसने कहा कि आप ऐसी कोशिश न कीजिये मुझे अकसर धोखा हो गया है, और गोकि मैं उससे बारहा कहता था कि वे लोग बहुत कम हैं ताहम वह उनका शुमार ज्यादाही बतलाता रहा।

यों मायूस होकर गुस्से में आ हमलोगों ने उन अंग्रेज अफसरों के बंगलों को लूट लिया, तमाम असबाब व शीशाआलात वगैरह तोड़ डाला और बादज़ां उनमें आग लगा दिया ताकि इतने पर भी वे वहां से निकल कर हमारा मुकाबिला करें। मगर उन्होंने अक्लमन्दी को काम में लाकर मुतलक जुम्बिश न की, नाचार हम लोग उस मुकाम से जहां हमें लूट की सब से ज्यादा उमैद थी, वापस चले आये, ताहम जितना हमलोगों ने पाया कुछ कम न था मगर कितनों को एक पैसा भी हाथ न लगा।

मै अपने ठगों के साथ एक मकान पर जो बाहर से देखने में किसी अमीर का जान पड़ता था जा पड़ा और दूसरे पिंडारियों को जो वहां आने की कोशिश करते हमलोग बाज रखते और उन्हें हटा देते थे। यह मकान किसी दौलतमन्द हिंदू का था जिसके घर से हमने करीब तीस हज़ार रुपये का ज़ेवर वगैरह लूट लिया। कोई जिस्मानी अज़ीअत न दी गई क्योंकि मैं हर्गिज़ इस अम्र का रवादार न होता धमकी वगैरह से तमाम काम निकाल लेता था।

इस तरह मालामाल हो, अनकरीब सिपहर के हम लोग शहर से रवाना हुये और ८ बजते बजते करीब दस कोस पर जा कर खेमा खड़ा कर दिया जहां पीछा किये जाने का कुछ भी खौफ़ न था ।

हमलोग दर्या क्रष्णा से पार हो कड़पा तक चले गये जहां सुनते थे कि अंगरेजों ने गंटूर से भी ज्यादा खज़ाना जमा किया है । मगर यहां भी हमे मायूसी हुई । यहां के अफ़सरों को हमारी खबर पेश्तरही मिल चुकी थी और उन्होंने जंगी फौज मँगाकर शहर की मुहाफ़ज़त कर ली थी इसलिये हमलोग उन्हें छोड़ करनूल की तरफ झुके । यहां से भी हमलोग हटा दिये गये लेकिन दर्या के पार हो फिर हम नीज़ाम के रियासत में वारिद हुए । कुछ अंगरेजी सवार हमारा पीछा करतेही चले आये मगर वे दर्या के पार न उतरे । यहां हमलोगों ने मश्वरत कर यह ठहराया कि तमाम गरोह का तीन हिस्सा हो जाना चाहिए, इस्से दो फायदे होंगे औव्वल यह कि हमलोग तीन जमायत में होने से ज्याद: मुलक लूट सकेंगे, दोयम यह कि अंगरेज़ी फ़ौज किसका २ पीछा करती फिरेगी ? पस एक गरोह ने दर्या के किनारे २ मगरिब और दूसरे ने मशरिक का रास्ता लिया और तीसरी गरोह बीचहो में क़ायम रही ।

जिस गरोह ने मशरिक की सड़क ली थी उसमें चीतू के हमराह मैं और गफूरखां दोनों मौजूद थे । हमलोगों ने यह इरादा किया कि हैदराबाद के पूरब के मुलकों से होते हुए निर्मूल से गुज़र शिमाल की तरफ चौड़ी सड़क से निकल फिर नागपूर की रियासत से वापस आवें । अब फकत मैंही एक साथी गफूरखां का रह गया, इतने दिनों तक वह और सर्दारों के रहने से अकसर उन्हीं की सोहबत में रहता मगर अब उनके चले जाने से हम दोनोंमें ज्यादा रफ़ाक़त पैदा हुई, यहां तक कि हमारा बैठना उठना सब बाहम एकही खेमे में होता था । साहब, मैं उसके ज़ुल्मों को देखते २ उगता गया था । हर रोज़ उसका यही हाल था, और उसकी खसलत ज़ाहिर करने के लिये मैं हज़ारों में से एक का बयान बतौर नमूने के आप को सुनाता हूं ।

हम लोग योंही एक रोज़ एक शहर में पहुंचे जिसका नाम मुझे इस वक़्त भूल गया है पर खैर उस्से कोई मतलब भी नहीं । जैसा मामूली दस्तूर था

हम लोग एकबयक शहर में जा टूटे और लूट मार शुरू हो गई। अब मैं आप से क्यों पोशीदा रक्खूं, मैं भी उन सबों के साथ शरीक था, कोई भी मकान या झोपड़ा मुझ से या मेरे आदमीयों से न बचा। गफूरखां भी लूट में मशगूल था मैं अपना काम खतम कर चुका था, कई जगह मैंने औरतों के बदन पर से ज़ेवर उतरवा लिये उनके शौहर और वालिद को खौफ़ दिलाकर जो कुछ उनके पास था सब ले लिया, किस्सा कोताह यह कि जहां तक हो सका ले लिवा कर अपनी ठगों के हमाराह, जो दमभर भी मुझसे इलाहिदा न होते थे शहर से रवाना हुआ। वापिसी के वक़्त हम लोग सदर सड़क से चले आते थे कि अचानचक एक आलीशान मकान के अन्दर से सद्मे और चीखने की आवाज़ हमारे कान में पड़ी।

मैं फौरन् घोड़े से उतर पड़ा और अपने आदमियों को हमराह आने का हुक्म दे मकान के अन्दर जा घुसा। साहब, वहां पहुंचने पर जो माजारा मेरे निगाहों के रूबरू नज़र आया वह मुझे ताउम्र फरामोश नहीं हो सकता। देखता क्या हूं कि गफूरखां मय अपने सात या आठ आदमीयों के जुलुम में मशगूल है। तीन लाशें जमीन पर पड़ी खून में तड़प रहीं हैं और उनके गर्दन से गर्म खून हनोज जारी है। उनमें दो तो नौजवान लड़के और एक सिनरसीद: औरत थी।

गफूरखां के साम्हने एक अशराफ़ बुड्ढा शख्स खड़ा था जिसके मुंह पर गर्म राख भरा हुआ तोबड़ा चढ़ाया गया था और खां का एक शख्स उसके पीठ पर तलवार के मुठ्ठे से निहायत सख़्त जरबें लगा रहा था। उस बिचारे का सांस अनक़रीब बन्द होगया और यह गैरमुमकिन था कि वह एक लफ्ज़ भी बजवाब उन सवालातों को देता जो गफूरखां खुद तड़प कर उसके कानों के पास करता था, कि बतला तेरा रुपया कहां गड़ा है। दूसरी तरफ़ तीन नौजवान नाज़नीन निहायत खूबसूरत व परीज़ाद अपनी इज़्ज़त गफूरखां के लोगों से बचाने में लग रही थीं, और उनके बिखरे हुये बाल, परेशान हालत और गज़बनाक चीखों से साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि मेरे आने के पेश्तर उन पर क्या २ जुलुम और सितम न हो चुके हैं।

मैं क्या कर सकता था ? गोकि मैंने अपनी तलवार म्यान से आधी खींच ली थी ताहम् मैं ज़ाहिरा तौर से खां पर हमला करने से खौफ खाता क्योंकि वह मेरा अफ़सर था और अगर मैंने उस वक़्त उसे और उसके लोगों को मार डाला होता तो यह वार्दात चीतू को बगैर ज़ाहिर हुये न रहती, फिर उस वक़्त मेरी क्या हालत होती ? पस अपने गुस्से और जोश को लगाम दे मैं उसके क़रीब पहुंचा और उसका ख्याल उस कारेज़ुल्म से हटाने की कोशिश करने लगा।

मैंने कहा "इधर आइये खां साहब, करीबही एक मकान है जिसके अन्दर दाखिल होने से मकानवाले मुझे रोकते हैं, मैं चाहता हूं कि आप मेरी मदद करें, आपकी तकलीफ़ का एवज़ वहां निकल आवेगा क्योंकि मैंने सुना है कि वे लोग दौलतमन्द हैं और उनके पास नकद रुपया और ज़ेवर बहुत ज्यादा है।' मैंने यह कुछ बहाना भी न किया था क्योंकि हमलोगोंने एक आलीशान मकान में घूसने की कोशिश की थी मगर जब सुना कि उसमें कोई नहीं रहता तो बाहर निकल आये।

उसने कहा "सब्र कीजिये, पहिले यह बहार तो देखिये। इन बेवकूफ़ों ने तलवार खींच कर हमें अन्दर आने से बाज़ रखने की कोशिश की और खुद मुझेही एक तरफ बाजू पर थोड़ी सी खरोच लग गई है। मगर ये कम्बख़्त काफ़िर भला हम दीन्दारों का मुक़ाबिला क्या कर सकते? थे मैंने इसी कमरेमें उन्हें और उनकी मां को अपनी तलवार से काट डाला। मेरे लोग उनकी बीबियों से दिल्लगी कर रहे हैं और आप देखतेही हैं कि मैं इस ज़िद्दी बदजात बुड्ढे से जो कुछ हो वसूल करने की कोशिश कर रहा हूं. मगर यह कम्बख़्त सुनताही नहीं पस लाचार होकर मुझे इसके मुंह पर तोबड़ा चढ़ाना पड़ा।"

मैंने कहा "शायद अब इसके पास कुछ भी नहीं है, जो हो मगर जब तक तोबड़ा उसके मुंह पर है वह बोल नहीं सकता, इसे हटवाइये तो इसकी बात सुनी जाय।"

खांने कहा "अच्छा देखिये, मगर यह हर्गिज़ बतलाने वाला नहीं।"

मैंने उस पिंडारी से जो उसके पीछे खड़ा था कहा "हटा तोबड़ा और थोड़ा पानी ले आ, इसके गले में गर्म राख भर गई है।"

तोबड़ा उतार दिया गया और एक घड़ा पानी जो उसी कोठड़ी के एक कोने में रक्खा था लाया गया, उसमें से एक गिलास पानी निकाल एक पिंडारी ने उसके मुंह से लगाया मगर उसने साथ नफ़रत के पीने से इन्कार किया क्योंकि वह जात का हिन्दू और ब्राह्मण था।

गफूर खां ने उसकी यह हालत देख गुस्से से तड़प कर कहा "पीता है की नहीं? वरना अल्ला जानता है मैं अभी इसे तेरे गले में उतारता हूं। कम्बख़, काफ़र! जिसे गौ का पिशाब न्यामत है वह मुसलमान के हाथ का पानी पीने से इन्कार करे।"

उस बुड्ढे ने भारी आवाज से जवाब दिया "लहू के प्यासे! हत्यारे! तेरे या तेरी जात के हाथका पानी मुझे ज़हर के बराबर है मैं अपने बेटों का लहू पीना कबूल करूंगा पर तेरे हाथ का पानी नहीं पी सक्ता।"

गफूरखां ने कहा 'हां! ऐसा! तो मैं तुझे वही पिलाऊंगा, देखो समन्दखां उस प्याले में गरमागरम खून छत पर से भर लो यह बुढ़ा उसे बेहिश्त के आबे-हयात के मानिन्द पीवेगा।'

मैंने गफूरखां को रोक कर कहा "हां! हां!! ऐसा इनसानी से बईद काम काम न किजिये"

खां ने दाँत पीस कर कहा 'नहीं आप हर्गिज़ दखल न दीजिये, देखिये मीरसाहब हम और आप दोनों दोस्त हैं और चाहिये कि हमेशा योंही बने रहें। अगर आप इसमें दख़ दीजियेगा तो नाहक मेरे और आप के दर्मियान झगड़ा हो जायगा, क्या उसने आप के रूबरू नहीं कहा कि मैं पानी की बनिस्बत खून ज्यादा पसन्द करता हूं"

समन्दखां ने तब तक आधा प्याला लाल और गर्म खून से भर लिया और लाकर उस रूबरू रख ठठ्ठे से मुस्किरा कहने लगा "पी जा यह गंगाजल है, इससे तेरा दिल खुल जायगा और तू बतलावेगा कि तेरा माल कहां छिपा है।"

गफूर खां यह देखकर ज़ोर से हँसा और कहने लगा "अल्लाह जानता है समन्दखां, तेरी भी क्या तेज़ अक्ल है, यह अम्र काबिल किताबों में मुन्दर्ज होने के है मैं इसका ज़िक्र आज चीतू से जरूर करूंगा।"

मगर उस बुड्ढे ने अपनी गर्दन फेरली और एक लम्बी आहसर्द उसके कलेजे से उठी।

गफूरखां ने तड़प कर कहा "क्यों फुजूल वक्त खराब करते हो, इसका मुंह तलवार से खोल कर प्याला उलट दो।"

या अल्लाह! या अल्लाह साहब! उन दोनों बदज़ातों ने मेरे रूबरू तलवार से उस बिचारे का मुंह जबरदस्ती खोल खून उसके गले में उतार दिया बल्कि इसी कोशिश में उसका दहिना रुखसार भी तलवार से आधा काट डाला।"

गफूर खां ने पूछा "अब भी बतला तैंने दौलत कहां छिपा रक्खी है, जल्द कह इस ज़िद्द से क्या फ़ायदा है? क्या तू नहीं जानता कि तेरी ज़िन्दगी मेरे हाथ है और एकही वार से तुझे मैं उसे जहन्नम में पहुंचा दूंगा जहां ये बेवकूफ़ तेरे पेश्तर जा चुके हैं?" इतना कह उसने तलवार उठा उसके बेटों के लाश की तरफ इशारा किया।

"मार" उस बुड्ढे ने कहा 'मार, किसी तरह मार भी डाल, मैं अब बुड्ढा हुआ मेरा मरनाही भला है, मार अब क्यों देर लगाता है?"

गफूरखां गजब से छत्त पर पैर पटक कर चिल्लाया "मगर तेरा खज़ाना कहां है, बेवकूफ!।"

उसने जवाब दिया "मैं कह चुका हूं कि मेरे पास अब कुछ नहीं है, मैंने तो पेश्तर ही कह दिया था मगर आप सुनतेही नहीं। मेरे पास जो कुछ था सब दे दिया, इसपर भी आप का जी नहीं भरता। आपने मेरे बेटों और औरत को मार डाला और मेरे बेटियों की बेइज्जती की बस अब हम सभों को भी मार डालिये तो बखेड़ा दूर हो।"

गफूरखां ने कहा "देखो, इस कम्बख़्त की बातें सुनो" "यह हम से दिल्लगी करता है। सच है कि बुड्ढों की अक्लमारी जाती है। ज़रा तुममें से एक शख्स तेल और चिराग तो ले आवे, देखूं तो कि इतने पर भी यह बतलाता है या नहीं, आज तक मैंने ऐसा कोई बशर न देखा जो इस इम्तिहान में न ठहरा हो।"

इस अर्से में तमाम मकान पिण्डारियों से भर गया और अगर मैं दखल

दिया चाहता भी तो मेरी हिम्मत न पड़ती। मैं चुपचाप खड़ा देख रहा था कि जो इसकी मर्ज़ी आवे कर लेने दो, आखिर तो यह अपने किये की सजा पावेहीगा मैं उसे क्यों रोकूं?"

तेल फ़ौरन् लाया गया और उन कटे हुये लाशों की धोती और कुरते में से बहुत सा चीथड़ा फाड़ तेल में डुबो उस बुड्ढे के उँगलियों में लपेट कर एक खासा पंजशाखा बना लिया गया।

गफूरखां ने कहा "चिराग़ लाओ और इसे मज़बूत पकड़ो"। हुक्म पातेही एक शख्श ने चिराग़ रौशन किया।

गफूरखां ने दांत बैठा कर कहा "देख, मैं यह आखिरी मौका तुझे देता हूं, तू खूब समझता है कि तेरे हाथ से इस वक़्त क्या काम लिया जायगा। जल्द जवाब दे वर्न: मैं तेरी उँगलियों की मशाल बनाता हूं जो अज़खुद उस तारीक मुकाम को दिखला देंगी जहां तूने अपना खज़ाना दफ़्न किया है"।

उस बुड्ढे ने हार कर जवाब दि.. "जो तुम्हारी मर्ज़ी हो करो, मुझे मार क्यों नहीं डालते, जो मुझे दुःख देनेही में तुम्हारा जी भरे तो अच्छा बाबा योंही सही, अब तो नारायण ने मुझे तुम्हारे हाथों दे रक्खा है उसकी ऐसी ही मर्ज़ी होगी तुम्हारा क्या दोष है"। तुम मेरा चिल्लाना सुनोहीगी नहीं चाहे मेरा तमाम हाथ भस्म हो जाय। थुड़ी है तुम पर!!!

गफूरखां ने कहा "बालो, यह बदज़ात यों माननें का नहीं"।

एक एक करके उसकी सब उँगलियां बाल दी गईं और दो शख्स उसका हाथ मज़बूती से पकड़ लटकाये थे ताकि आग की तेज़ी जल्द बढ़ जावे। अल्लाह! अल्लाह! साहब, उसे देखने से तबीयत घबड़ाई जाती थी उँगलियों का मांस शोले की जलन से चरौता था और वे दोनों पिण्डारी बार बार उन पर ताजा तेल मशअल के मानिन्द छोड़ते जाते थे।

उस बुड्ढे ने अपनी ताकत के पार हिम्मत की, मगर इन्सान की क्या ताकत है जो उसे बर्दाश्त कर सके। उसका चिल्लाना निहायत दर्दअंगेज़ था पत्थर का कलेजा भी पिघला जाता था मगर गफूरखां के दिल में ज़रा भी असर न हुआ। वह निहायत संगदिली के साथ उस बिचारे के सिर पर तलवार लिये

खड़ा था और उसके चिल्लाने पर शैतान के मानिन्द तड़प कर पूछता कि अब भी अपने खज़ाने का पता बतला । मगर उसमें मुतलक बोलने की ताकत न थी और कुछ देर बाद वह बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

मैंने कहा "अबतो आपने इसे मारही डाला, रहमत अल्ला के लिये इसे तर्क कीजिये और चलिये, अब और क्या किया चाहते हैं? या तो उसके पास रुपया हैही नहीं या वह देगा नहीं"।

उसने मेरे कहने पर कुछ लिहाज़ न किया और पीछे फिर चिल्ला के अपने साथियों से कहने लगा "कहां है वे सस्सुरियां, उन्हें मेरे साम्हने लाओ ताकि मैं उनसे रुपयों का हाल दर्य्याफ़ करूं क्योंकि इसके पास बेशक माल है"।

मगर उन्हें तो पिण्डारियों ने पेश्तर ही खतम कर डाला था और उनकी लाश खून में तड़फती हुई एक कमरे के अन्दर पाई गई।

ज्योंही यह खबर गफूरखां के पास पहुंची वह आग बबूला हो गया और जंगली जानवरों के मानिन्द गुस्से से दांत पीसने लगा, उस वक्त उसकी शक्ल देख कर खौफ़ मालूम होता था ।

इतने में उस बुड्ढे के चेहरे और उँगलियों पर ठंढा पानी दिया गया और उसे कुछ होश हुई। वह उठ बैठा और बड़ी बड़ी आंखें फाड़ चारो तरफ़ निगाह फेर अपने जले हुये हाथ की तरफ़ मुंह बिचका देखने लगा। हाय! हाय! जो उसके इर्दगिर्द खड़े थे क्या वे इन्सान थे? अल्लाह जानता है साहब, वे शैतान से हर्गिज़ कम न थे क्योंकि वे सब उस बिचारे की हरकतें देख २ कर उस पर हँसते और ठट्ठा उड़ाते थे।

गफूरखां ने उसे तलवार की नोक से खोद कर कहा "बोल, बतला काफ़िर! या अभी और अज़ीयत उठाया चाहता है?"

मगर वह अधमरा हो रहा था कुछ न बोला मारे अज़ीयत और तकलीफ़ के उसमें मुतलक दम मारने की ताकत न थी।

खां ने तलवार म्यान से खींच ऊंचे उठाकर कहा "बोल कम्बख्त, बोलता है कि नहीं?" साहब वह बिचारा उसकी तरफ़ गर्दन उठा आजिज़ी से देखनेलगा उसने बोलने की बहुतेरी कोशिश की मगर उसके मुंह से आवाज़ न निकली।

गफूरखां गुस्से से उसके सिर पर नंगी तलवार चमचमा रहा था और जब उसने कुछ जवाब न पाया तो इस ज़ोर से शमशेर मारी कि उसका सिर बीच से काट कर दो टूक हो गया और उसी दम उसकी जान कालिब से रिहा हुई।

मैंने दिल में कहा कुछ पर्वाह नहीं, गफूरखां का प्याला भर गया, और मैंने उसी मुकाम पर कसम खाई कि अगर इसका एवज़ इससे न लूं तो मेरा नाम अमीरअली नहीं।

सैंतीसवां पर्व्व ।

उसी घड़ी से मैंने उसका काम तमाम करने की नीयत बाँध ली। खेमें में पहुंचतेही मैंने अपने तमाम ठगों को जमा कर उन्हें वह इरादा सुनाया जो मेरे दिल में जम रहा था। मैंने उनसे कहा —

"भाइयो, आप लोग देख चुके हैं कि गफूरखां पूरा शैतान है, ऐसे शख्श को हर्गिज़ इनसान नहीं कह सकते। औव्वल तो पिंडारी की ज़ातही बद होती है मगर यह उनमें भी महज़ बदतर है और हर्गिज़ काबिल जीता छोड़ने के नहीं। मोतीराम! तुम्हें और पीरखां को तो करिंजाह के उस ब्राह्मण की लड़की का हाल मालूमही है, तुम्हें यह भी याद होगा कि क्योंकर मैं उस वक्त अपना खून पीकर इस शैतान की गर्दन मारने से बाज़ रहा, मैंने उसी वक्त उसका काम खतम किया होता मगर मैंने देखा कि उस वक्त उसकी किस्मत मेरे हाथ न थी। मुझे यह मालूम पड़ता था कि बहुत जल्द अल्लाताला मुझ हकीर के ज़रिये इसकी बेइनसाफी की सज़ा दिलावेगा, गोकि मैं जानता था कि इसका वक्त आ गया है ताहम मैं अपने तईं रोकेही जाता था। मैं ख्याल करता था कि कोई न कोई कुसूर इसके हाथ से ऐसा होगा जो तमाम पेश्तर के ज़ुल्मों को भी मात करेगा और देखो वही बात हुई, आप सब लोग इसके चश्मदीद गवाह हैं। अब क्या इससे भी बढ़ कर कोई ज़ुल्म हो सकता है?"

मेरे लोगों ने एक आवाज़ से जवाब दिया 'हर्गिज़ नहीं, इससे बढ़ कर अब और क्या होगा, वह अपने हद्द दर्जे को पहुंच चुका और अब हमारा बनिज होना चाहिये'।

मैंने कहा 'वह जरूर बनिज होगा ज़रा सब्र करो—सुनो। तुम जानते ही हो कि मेरे पास अब तक उसमे से तीन बोतल शराब मौजूद है जो मैं गफ्फूर के फिरंगियों से लूट लाया था; उसे शराब का निहायत ज्यादा शौक है और वह आसानी से उसे पीने के लिये यहां बुलाया जा सकता है। मैं उसके हिस्से में अफीम घोल दूंगा और बादजां दो चार प्याले के वह बेहोश होकर बआसानी हमारा शिकार हो जायगा।"

पीरखां ने कहा "बहुत अच्छा, यह निहायत उम्दा तर्कीब है। अगर आजही शब को यह किया जाय तो क्या बुरा है?"

मैंने कहा 'नहीं, आज नहीं, इस भीड़भाड़ में हमें होशियार रहना चाहिये, कल मेरा खेमा एक कोने, बल्कि सब से कुछ दूर हट कर खड़ा किया जाय, और आधीरात के वक़्त जब तमाम लोग सो जायंगे हमलोग बआसानी उसका काम तमाम कर सकते हैं।'

पीर खां ने कहा "मीरसाहब, एक बात मेरी भी सुनिये, गफूर खां के खुर्जी में दौलत बेशुमार है, क्या हमलोग उसे किसी तरह अपने हाथ नहीं चढ़ा सकते?"

मैंने कहा "मैं भी यही ख्याल कर रहा हूं, मगर देखता हूं कि इस में ज़ाहिर हो जाने का खतरा है। कोई बन्दिश ऐसी निकालना चाहिये कि "सांप मरे न लाठी टूटे।"

पीरखां ने कुछ देर तक बग़ैर ख्याल कर कहा "जमादार साहब, मैं एक तर्कीब सोचता हूं उसमें आप भी कोई नई बात बतलाइये और इनशाअल्ला खुर्जी ज़रूर हमलोगों के हाथ चढ़ जायगी। मैं यह कहता हूं कि जब गफूरखां नशे में बेहोश हो जावे तब आप उसे अपनेही खेमे में सोने की सलाह दीजियेगा और कहियेगा कि अपना घोड़ा और ज़ीन भी मँगवा भेजिये ताकि सुबह को जाती वक़्त आपको सुभीता हो। अगर ज़ीन आगई तो हम खुर्जी को खालीकर उसे भी उसके साथही दफ़न कर देंगे, और अगर न आई तो हम इसी में खुश होंगे कि उस कम्बख़्त बदज़ात का मारना क्या कुछ कम है।"

मोतीराम ने कहा "मुझे खतरा है कि शायद सगुन उम्दे न हों, बेहतर हो कि ज़रा सगुन भी देख लिये जांय।"

मैंने कहा "बहुत अच्छा, तुम उधर सगुन देखो तब तक मैं पीरखां की तर्कीब पर बगौर ख्याल करता हूं।"

इतनी बातें कर हमलोग अब को एक दूसरे से बिदा हो सो रहे। दूसरे दिन सुबह को रवानगी में दो एक छोटे मोटे गांव लूटे गये मगर उस हुल्लड़ में मैं गफूरखां से अलग न होता और कसदन् इधर उधर से होता हुआ उसी रास्ते में आ मिलता, पस हम दोनों अपने २ कामयाबी और लूट मार की ज़िक्र करते खुशी बखुशी हवा खाते चले जाते थे।

योंही बातें करते २ मैंने कहा "कहिये खांसाहब, आपको गफ्टूर के मकानों पर का हमला याद है न कि क्योंकर हमलोगों ने बेशकीमत माल की उम्मीद से उन कम्बख्त फिरंगियों का तमाम मकान खोज डाला। खुदा की मार इन कंजूसों पर! दरहकीकत वे नव्वाब के मानिन्द दौलतमन्द होते मगर ताहम सोने चांदी का कोई भी ज़ेवर या बेशकीमती माल नहीं रखते—जहां देखिये चीनी के बर्तनही बर्तन नज़र आते हैं। आपको तो याद ही होगा कि हमलोगों ने क्योंकर उनके तमाम बर्तन तोड़ डाले।

गफूरखां ने जवाब दिया "हां हां, मुझे खूब याद है, क्या कहूं फ़कत हमारे सरदार के बुज़दिली का बाइस था—यह मैं आप से कहता हूं,—वर्नः हमलोगों ने खज़ाने पर हमला कर उसे लूट लिया होता, अब आप देखते ही हैं कि उस तकलीफ़ के एवज़ हमलोगों ने कुछ न पाया। ताहम् हमने उनके तमाम मकानात खाक स्याह कर दिये, खैर इतनाही सही।"

मैंने कहा "सच है खांसाहब जिस वक्त उनके मकानात में आग लगी गोया उनके कलेजे में आग धधकती थी, क्या आपको वह भी याद है जो मैंने उनके बंगले में पाया और उसी वक्त आप को दिखलाया भी था—मेरा मतलब छोटी शराब की बोतलों से है जिन पर छपे हुए कागज़ लगे थे। वह चीज़ निहायत उमदः और नायाब थी।"

"माशा अल्ला" खां ने कहा "उसकी लज्जत तो चन्दरोज तक मेरे ज़बान से न गई। इसमें शक नहीं कि ये काफिर उमदी शराब पीना खूब जानते हैं, बेहतर होता कि उन्हें मैं साथही ले आता; चन्द बोतलों का ले आना कोई मुशकिल बात न थी जिनसे तमाम दिन की थकावट बाआसानी रफा हो सकती थी।"

मैंने कहा "खां साहब मैं आपकी बनिस्बत ज्यादातर होशियार था, ऐसी शराब हमेशा हाथ नहीं लगती, मैं चन्द बोतलें अपने साथ ले आया था और मुझे यकीन है कि अगर टूट न गई होंगी तो वे अब तक मौजूद होंगी।"

उसने कहा "क्या आप के पास चन्द बोतलें मौजूद हैं? तो लिल्लाह यार मेरे! ज़रा उस खज़ाने नायाब में मुझे भी शरीक कीजियेगा क्योंकि मैं हलफ़न् कह सकता हूं कि यह आबे-हयात बिहिश्त में भी नसीब न होगा।"

मैंने कहा "खां साहब, यह क्या बात है जिस वक़्त हुक्म हो उसे खिदमत में हाजिर करूं मगर ताकि कोई देख न ले अगर कोई बोतल बची होगी तो मैं आपको इत्तला कर दूंगा पस अगर उस वक़्त चिराग लगने के बाद मेरे खेमे में आप तशरीफ़ ले आवें तो निहायत उमदा हो मेरे आदमीयों में से एक शख्स निहायत उमदा पुलाव पकाकर तयारा कर रक्खेगा और बादअजां चखने पुलाव वगैरह के हम लोग बाआशाइश शराब पीयेंगे।"

उसने कहा "मीर साहब, आप की गुफ़्तार में भो शराब से कुछ कम मजा नहीं, मैं आज ज़रूर आऊंगा। अपने सईस को हुक्म दे दूंगा कि वह मेरे घोड़े को लाकर आपके घोड़ों के साथ बांध दे; न तो मुझे कोई देखेगा और न मैं किसी को साथ लाऊंगा आप जानतेही हैं कि शायद मैं ज्यादा पीजाऊँ तो मैं नहीं चाहता कि मैं ज़ाहिरा में ईमान का मुनहरिफ़ कहलाऊं।"

उसकी बातें सुनते २ मेरा कलेजा मुंह को उछला आता था, मैंने ख्याल किया कि अब तो वह खुर्जी बगैर तकलीफ़ कियेही मेरे हाथ लग जायगी और ज़ाहिर होने का खतरा भी न रहेगा, मैं दिलही दिल उसका किसकदर शुकरगुजार हुआ कि आप से क्या अर्ज़ करूं।"

मैंने कहा "खांसाहब, आप बजा फ़र्माते हैं, अगर कोई देख लेगा तो ठीक न होगा, हमलोगों को यह काम पोशीदा तौर से करना चाहिये। सिवाय पीरखां

के जिसे आप जानतेही हैं और कोई खेमें में न रहेगा, वह मेरे भाई के बराबर और लासानी दोस्त है, हम सब खूब मख़मूर होकर पीवेंगे। जिस वक्त पुलाव तयार होगा मैं उसे आप के बुलाने के लिये भेज दूंगा।"

उसने कहा "नहीं नहीं, हर्गिज़ नहीं, उसके भेजने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैं खुद चिराग लगने के बाद टहलता हुआ आप के खेमें में आ जाऊँगा।" इतना कह उसने अपने साईस को जो कुछ दूर पीछे पीछे चला आता था कहा "देख जिस वक्त मुझे चलते देखियो मेरे घोड़े पर ज़ीन कसकर मीरसाहब के खेमें पर ले आइयो। याद रख कि सवारी का तमाम सामान दुरुस्त रहे और जिस वक्त तू वहां पहुंचे मेरे घोड़े को मीरसाहब के घोड़ों के साथ बांध दीजियो।"

"जो हुकुम" उसने कहा "खुदावन्द के इर्शाद की तामील ज्यों की त्यों की जायगी।"

गफूर खां ने कहा "और देख याद रखियो कि यह हाल किसी पर ज़ाहिर न हो कि मैं कहां जाता हूं और अगर घोड़ा लाते वक्त कोई तुझसे कुछ सवाल करे तो हर्गिज़ जवाब न दीजियो।"

उसने कहा 'जो हुक्म खुदावन्द, जब खाविन्द का ऐसा हुक्म है तो ताबेदार क्यों बतलावेगा?"

खां ने कहा "देख फिर भी तुझे ताकीद करता हूं वर्न: तेरे लिये कोड़ा तलाश किया जायगा।"

वह सलाम कर पीछे हट गया और हम दोनों फिर इधर उधर की बातें करते चलते हुये, बीच बीच में बड़े २ पिंडारी सर्दारों का भी ज़िक्र और उनकी बहादुरी का बयान होता जाता था। गफूर खां इन बातों का खूब जाननेवाला था और वह निहायत खुशदिली के साथ मेरी बातों का जवाब देता था। मैंने उसे मैखोरी की उम्मेद पर निहायत खुश कर रक्खा था पस इसी तरह हम दोनों अपने २ घोड़ों पर हवा खाते बाहम् बातें करते चले जाते थे।

चलते २ बहुत दूर की सफ़र करने के बाद हमलोग उस दिन की मंजिल पर जा पहुंचे और खेमें में पहुंच दो पहर की सख़्त धूप से ज़रा आराम पाया दिन में कई मर्तब: खां का पैगाम यह पूछने के लिये आया कि खाना तैयार

हो चुका या नहीं, मगर उसके जल्द आने से मेरा मतलब हासिल न होता इस लिये मैं टालताही जाता था।

मोतीराम ने मुझ से कहा "मीर साहब, तमाम दिन तो आप खां के साथ थे, मैं ख्याल करता हूं कि शायद आपने सगुन अब तक न देखा होगा।"

मैंने कहा "नहीं, मैंने तो नहीं देखा, मगर यकीन करता हूं कि तुम ज़रूर देख चुके होगे।" मैं खूब जानता था कि सगुन का एतबार मेरे लोगों को ज्यादा है और बगैर उमदा सगुन निकले वे हर्गिज़ इस कार में शरीक न होंगे बल्कि सरासर इनकार करेंगे।"

मोतीराम ने कहा "हां, मैं गाफ़िल न था, कलरात को आप के यहां से जाने के बाद, मैंने पीरखां को लेकर अपने चन्द दूसरे साथियों के हमराह निशान के आगे गुड़ चढ़ाया और धन्य है भवानी कि उसने थिबाऊ और पिलहाऊ दोनों सगुन उमदे दिये; पस अब इस कार में मुतलक खौफ़ नहीं है, आप बेखट्के उसे बनिज कीजिये।"

मैंने कहा "मोती, मुझे पेश्तरही उम्मीद थी कि भवानी की रहमत हमलोगों पर होगी क्योंकि मुझे मालूम पड़ता था कि अल्लाह मेरी रहनुमाई इस कार में कर रहा है, और अगर सगुन उमदे न भी निकलते तौभी मैं इस कार को अपनी दिल की ख्वाहिश के म्वाफ़िक ज़रूरही अंजाम देता।"

उसने हँसकर जवाब दिया 'नहीं, नहीं जमादार साहब, आप हर्गिज़ ऐसा न कहिये, यह सगुनोंही का बाइस है कि आप की ऐसी खुशकिस्मती है, मगर अब इसमें कोई खतरा नहीं क्योंकि सगुन उमदे निकल चुके हैं।"

मैंने कहा "अगर हमलोग इसमें कामयाब हुये तो यहां हम लोगों को अपने काम की कमी न रहेगी, मगर इसका जिक्र दूसरे वक्त किया जायगा। इस वक्त तो खां के गायब होने पर बड़ा हलचल मचेगा इस लिये हम लोगों को कुछ दिनों तक खामोश रहना चाहिये।"

उसने कहा "जमादार साहब यह बात तो आपने काबिल अपने अक्लमन्दी के कही, हमलोग भी आपस में यही सलाह कर रहे थे कि इसका जिक्र आप से छेड़ा जाय; देखिये हररोज़ शबको ये कुत्ते पिंडारी यहां पड़े रहते हैं और हर

एक के पास सैकड़ों हज़ारों की जमा मौजूद है। तौभी हमलोग इतने दिनोंतक अपने कार में सुस्त रहे,लानत है मुझपर; और हजार अफ़सोस है मेरी काहिली पर! अब तो एक शब भी बगैर बनिज के न जाने देना चाहिये।"

मैंने कहा "मेरे मोती, ज़रा सब्र करो, पहिले खां को तो लेने दो, चलो हम लोग आपही लूघों का काम करें"।

उसने कहा 'मीरसाहब, उसके लिये तो हमलोग तयारही हैं, सच्चा ठग वही है जो मौका पड़ने पर हरकिस्म का काम करने को मुस्तैद रहे। हम सब काम करने को हाज़िर हैं।"

मैंने कहा "तो अब वक़्त खराब करने की ज़रूरत नहीं, तुम मेरे और अपने खेमे के दर्म्यान कोई पर्दा खड़ा कर देना और उसी के अंदर क़ब्र खोदना चाहिये। बेहतर है कि उसके आने के पेश्तरही क़ब्र तैयार होजाय, मगर नहीं शायद वह इसपर कुछ शक करे; हमलोग उसे खतम करने के बाद बहुत जल्द क़ब्र तयार कर लेंगे।"

उसने कहा "जमादारसाहब, आपका फ़र्माना बजा है वह ज़रूर शक करेगा; कुछ जरूरत नहीं कि वह ज्यादा गहिरे में दफ़न किया जाय; हमलोगों में तीन शख्स अच्छे होशियार लूघे हैं, वे सब बात की बात में क़ब्र तयार कर देंगे।"

मैंने कहा "मोती, उसके साईस को भी तो साथही खतम करना चहिये न?" उसने कहा 'बेशक, आप और पीरखां तो गफूरखां को लीजिये और साईस को मेरे सुपुर्द कीजिये, हम लोग उसे समझ लेंगे।" मैंने कहा "बहुत अच्छा, तो अब हमारा तमाम इन्तजाम हो गया। यादरखो कि फ़कत पीरखां ही हमारे साथ खाने बैठेगा, तुम सब बाहर रहना और ख्याल रखना कि घोड़ों पर ज़ीन कसी रहे ताकि बहालत शुबहा या ज़ाहिर होजाने के हमलोग फ़ौरन् हवा हो जांय, मगर मुझे इन दोनों बात का खौफ़ नहीं है।"

मोतीराम ने कहा 'खौफ मुझे भी नहीं है पर चूंकि यह मशहूर और भारी सर्दार है इसके एकबयक गायब होजाने से ज्यादा हलचल मचेगा, मगर इसपर यही ख्याल होगा कि या तो वह अपने लूट का माल लेकर भाग गया या किसी

ने उसे मार डाला मैं जो आप से अर्ज़ करता हूं मीरसाहेब कि हमारे निमावड़ से रवाना होने के बाद कितनेही पिण्डारी एक दूसरे के हाथ से मारेगये हैं।"

मैंने कहा "मोतीराम मैं इसे बावर करता हूं। मैंने रास्ते में कितनोंही को झगड़ते देखा और यह सभी जानते हैं कि ऐसे लोग इन्सान के जान का बहुत कम लिहाज़ रखते हैं। अब की मर्तबः के पिण्डारी पहिली चढाई से ज्यादः-तर बादमाश हैं। मगर खैर अब तुम जाकर पर्दा वगैरः दुरुस्त करो और पीर खां को मेरे पास भेज दो।"

शाम हो गई और आफ़ताब के गुरूब होते ही मुल्ला के बांग देने की आवाज कान में आई जगह बजगह लोग जमा होकर शतरंजियों पर निमाज पढ़ने और अल्लाह से दुआ मांगने लग गये इनमें सैकड़ोंही ऐसे थे कि जिनके हाथ से उस-दिन के खून का दाग भी अब तक साफ़ न हुआ था। निमाज खतम होने के बाद हर एक शख्स अपने अपने घोड़ों के पास जाकर सो रहा ताकि दूसरे दिन की सफर के लूटमार और मेहनत के लिये तर ओ ताज़ा हो जाये।

वक़्त आ पहुंचा और मैं अपने खेमें में बैठा गफूरखां के आने की इन्तज़ारी खींच रहा था, मेरा दिल मारे खुशी के उछल रहा था क्योंकि मुझे यह ख्याल होता को अगर ताउम्र मैंने कोई उम्दा काम किया तो यह है कि आज उन मारे हुये लोगों का एवज़ गफूरखां से लूंगा।

पीरखां मेरे पास बैठा था, हमारे दिल में इस कदर इस बात का ख्याल भर रहा था कि हम दोनों आपस में बातें करते भी न थे?

उसने मुझ से पूछा "आपने बोतल में अफीम मिला दी?"

मैंने कहा "हां मैंने दो तोला अफीम दी है खुद मैंने उसका जायका लिया तो जुबान पर मालूम होता था, मगर यह दूसरा बोतल होगा इसलिये कुछ मालूम न पड़ेगा और अगर वह मालूम भी कर लेगा तो क्या हुआ उस वक़्त जैसे बनेगा हमलोग बन्दोबस्त कर लेंगे। आप क्या समझते हैं कि बगैर शोरो गुल के हमलोग इसका इन्तजाम कर सकेंगे या नहीं?

उसने जवाब दिया "मीरसाहेब अगर न करसके तो निहायत शर्म की बात

है, आप देखतेही हैं कि मैं ताकत मे उस्से कुछ कम नहीं हूं और फिर आप का रूमाल हमेशः कामयाब होता है। मगर ताकि आवाज़ मुतलक बाहर सुन न पड़े मैं यह सलाह करता हूं कि हमलोग मोतीराम और चन्द दूसरे शखसों को अन्दर बुलाकर गाने बजाने का हुकुम दे दें—याने मा बाद उसके कि जब गफूर खां पहली बोतल पी चुके। मोती के पास सितार और तबला मौजूद है बस उसके शोरोगुल में कोई भी खां की आवाज न सुन सकेगा ”

“नहीं नहीं” मैंने कहा “गाने की आवाज़ सुनकर दूसरे लोग भी जमा हो जायंगे, यह तर्कीब ठीक नहीं। हमलोगों को अपनी हत्तल मकदूर कोशिश करना चाहिये बाकी अल्लाह के आसरे छोड़ दिजिये खैर वक्त आने पर देखाजायगा।”

रात कुछ ज्यादा गई और हमारे चारो तरफ सन्नाटा छा गया। चन्द मुकामो पर आग जल रही थी जिस्से मालूम होता था कि यहां शाम के वक्त पिण्डारीयों ने खाना पकाया है, बाकी के तमाम गहिरी नींद में सो गये थे, हमारे पास वालों को तो मुतलक होश न थी। मैं अपने छोटे खेमें के दर्वाजे पर खड़ा निहायत इन्तज़ारी के साथ गफूरखां के आने को राह देख रहा था, आखिरकार मैंने देखा की अँधेरे में कोई शकल निहायत होशियारी के साथ राह में सोये हुये पिण्डारियों के उपर से डांकती चली आती है। मैंने दिल में ख्याल किया ‘क्या यह गफूरखां है?’ और फिर पीरखां से आहिस्ते कहने लगा ‘पीरखां देखो खां साहेब आते हैं और उनका साईस भी घोड़ा लिये पीछे पीछे आ रहा है।”

उसने आहिस्ते से कहा ‘शुक्र खुदाका मैंने तो समझा था कि देर ज्यादा हुई शायद वह न आवे।”

इतने में गफूरखां ने आवाज दी “कौन है? मीर साहेब! मुझे तो खतरा था कि शायद इस सख्त अंधेरे में मुझे आपका खेमा न मिले।”

मैंने कहा “आइये आइये खां साहब, बंदा कब से आप के इन्तिज़ार बैठा है आइये इस गरीबखाने को सर्फ़राज़ कीजिये।”

गफूरखांने खुशी से हाथ मलते हुये कहा ‘मालूम होता है कि बोतल आप को मिल गई, आप कुछ दिल्लगी तो नहीं करते?”

मैंने कहा "नहीं खांसाहेब, आपकी जान की कसम, वह देखिये बोतलें रक्खी हैं और पीरखां पुलाव लाने गया है ।"

उसने कहा "खूब, अल्लाह जानता है मीरसाहब, आज तमाम दिन मैंने फ़ाकाही किया है ताकि दस्तर्खान का खूब हज़ उठे, मैं इसी एक घंटा पेश्तरही आगया होता मगर बसबब किसी ऐसेही काम के दर्बार से बुलाहट आई थी इसलिये आप की इन्तिज़ार करना पड़ा" ।

मैंने पूछा "खां साहब आप का घोड़ा कहां है ?"

उसने जवाब दिया "आ गया है मेरे साईस ने उसे आप के घोड़ों में बांध दिया है । मैंने अपने दूसरे नौकरों को यह कह कर धोखा दिया कि आज मेरे सर में कुछ दर्द है खाना न खाऊंगा, और नींद का बहाना कर सो रहा और उन्हें सख़ हुकुम दे आया हूं कि कोई शख्स मुझे न जगावे । वे सब मुझे खूब पहचानते हैं पस बादजां थोड़ी देर आराम करने के मैं उन सभों को मुर्दे के मानिन्द सोता छोड़ खेमें के पिछले दर्वाज़े से चुपके निकल आया ज़रा अपने किसी आदमी को हुकुम दीजिये कि मेरे घोड़े के आगे थोड़ी घास डाल दें" ।

मैंने कहा "मैं घास का इन्तिज़ाम पेश्तरही कर चुका हूं" ।

इतने में पीरखां पुलाव लेकर आ गया, पस दस्तर्खान पर बैठ हमलोगों ने खाना शुरू किया ।

गफूरखां ने कहा 'मीरसाहब, ले अब शराब मँगाइये उसके बग़ैर पुलाव सूखा मालूम पड़ता है ज़रा गले को भी तरावट देना चाहिये' ।

मैंने फ़ौरन् बोतल को एक प्याले में थोड़ा उलट कर कहा "यह लीजिये मौजूद है, देखिये क्या उमदा लाल के मानिन्द इस्की चमक है" ।

खां ने प्याला खतम कर कहा "वाह! यह शराब हूरों के पीने की है दूसरों को कहां नसीब हो । आपही ख्याल करें मीरसाहब, कि क्योंकर हम सादिक दीन्दार लोग बिहिश्त में बीस हूरों के दर्म्यान ऐसी नायाब चीज़ों का शौक करेंगे, अगर वहां कोई चीज़ उमदा है तो इससे बढ़ कर और क्या होगा, मगर पीओ म्यां — मैं खुद अकेलेही तमाम नहीं पीया चाहता" ।

मैंने कहा "नहीं वह तो आपही का हिस्सा है बल्कि अभी एक और भी मुस्तैद है, मैं पीरखां के साथ इस बोतल में शरीक हो जाऊंगा। अफ़सोस है कि मेरे पास और ज़्यादा न हुआ या येही बोतलें बड़ी हो जातीं"।

उसने कहा "दरहकीकत मीरसाहब, यह बात तो निहायत अफ़सोस की है, खैर जो हो इतनाही बहुत है"—इतना कह उसने एक प्याला और चढ़ाया और कहने लगा—"ज़रा आपही ख्याल फ़र्मावें कि ये काफ़िर फ़िरङ्गी हररोज़ इस न्यामते-बेबहा को पीते थे। अब मुझे मुतलक ताअज्जुब नहीं होता कि इस नशे के जोश में वे ऐसे बड़े २ काम करते हों। कहिये मीरसाहब यही बात है न, कि वे सब एक गोल मेज़ के चौगिर्द बैठ कर खूब मय पीते, और गाते गाते बेहोश हो कर गिर पड़ते हैं ?"।

मैंने कहा "खां साहब आप का फ़र्माना बजा है"।

कुछ देर खामोश रहने के बाद गफ़ूरखां ने कहा "मीरसाहब, मैं चाहता हूं कि मैं उनका नौकर होता आप क्या ख्याल करते हैं कि अगर किसी को पीने की खाहिश हुई तो वे उसे देंगे न ?"

मैंने कहा "इसमें क्या शक है"।

"तब तो मैं जाकर उन्हीं की नौकरी करता हूं मीरसाहब, यह मज़ेदार मय तो कितनेही सादिक मुसलमानों को इन काफ़िरों की नौकरी करा देगी। मगर लोग कहते हैं कि हज़रत सिकन्दरजाह भी इसका शौक रखते हैं"।

मैंने कहा "जब मैं हैदराबाद में था तो ऐसा ही सुनता था, और वहीं पर मैंने इसका औव्वल ज़ायका भी लिया था, बादअज़ां गण्टूर में फिरंगियों के यहां बोतलें देखते ही मैं पहिचान गया"।

इतने में गफ़ूरखां तमाम बोतल चढ़ा गया और उसकी तरफ़ बड़ी २ निगाहों से देख कहने लगा "यह मय काबिल पादशाहों के है, मीरसाहब यह तो खतम हो गया, आपने कहा था एक बोतल और है"।

मैंने दूसरा बोतल उसे दे कर कहा "जी हां मगर अब फ़कत यही एक बोतल बाकी है"।

उसने कहा "मीरसाहब, इस वक्त मेरी तबीयत निहायत खुश है, अल्लाह

जानता है—मेरी ख्वाहिश कुछ गाने की होती है या ठहरो मैं उठ कर ज़रा नाचूंगा चाहे कोई कुछ ही कहे। रसूलिल्लाह साहब ने मुसलमानों को कुछ गाने को मनाही नहीं की है, यहां किसी के पास सितार है? लोग मेरे बजाने की अकसर तारीफ़ किया करते हैं।"

मैंने पीरखां से कहा 'जाओ मोतीराम की सितार तो ले आओ वह अच्छी है, कहिये खांसाहब अगर हुक्म हो तो मोतीराम को भी बुला लिया जाय?"

उसने कहा "कुछ पर्वाह नहीं मीरसाहब, शैतान भी हो तो मैं उसकी दाढ़ी उखाड़ सकता हूं—क्या वह गाना जानता है?"

मैंने कहा "खां साहब, मोतीराम की आवाज़ मिस्ल बुलबुल के है मैंने तो ऐसा गाना कभी सुनाही नहीं"।

गफूरखां ने आहसर्द भर कर कहा "अफ़सोस! ऐसे मौके पर तवायफों की हरिन सी आंखें और उनके घूंघरों की झनकार न होने से बिलकुल मज़ा किर्किरा हो जाता है। 'मयो माशूक गुलज़ारी जवानी। अज़ीं खुशतर च बाशद जिन्दगानी"। मीरसाहब जिस वक़्त दर्य्याये कृष्णा के किनारे हमलोगों का खेमा खड़ा था उस वक़्त के ऐश का हाल तो आप को याद ही होगा। उनमें एक गजब की खूबसूरत परीज़ाद थी मगर अब उनका ज़िक्र क्या करना मीरसाहब, अब उनके ज़िक्र से क्या फ़ायदा?"

मैंने कहा "खां साहब, निमावड़ पहुंचने पर बहुत सी तवायफ मिल जांयगी, यह देखिये मोती सितार लिये आ पहुंचा"।

मोती ने आतेही सलाम किया और बैठ गया।

खां ने कहा "कह मेरे मोती, सितार मिली है?" इतना कह गफूरखां मोती लफ्ज़ के इस जुमानी इस्तियामाल पर खूब हँसा।

उसने कहा "जी हां हुजूर, मिलाया तो है मगर हुजूर जैसे उस्ताद के हाथ लायक बन्दे की लियाकत कहां?"

खां ने सितार मोतीराम के हाथ से लेकर उसपर अपनी उँगली दौड़ाई, मालूम हुआ कि वह इस फ़न् का उस्ताद है, फिर कहने लगा—"मोती, सितार तो अच्छी है और आवाज़ भी इसकी मीठी है"।

हम सब बोल उठे "वाह! खां साहब, वाह, जब गुरूही में आपने यह उमदगी दिखाया तब तो बजाने पर आप गज़ब करेंगे, हां ज़रा बजाइये तो सही"।

उसने कहा "ज़रा एक प्याला दो तो, मैं गला तर कर लूं तो बजाऊँ, मोती तुझे कोई गज़ल याद है?"

उसने कहा "खां साहब, मैं गज़ल में कुछ ऐसी महारत नहीं रखता, तो भी जो हुजूर फ़र्मावें तो बन्दा कोशिश करे। मुझे अपने मुल्क के टप्पे वगैरह बहुत याद हैं"।

"ओह!" खां ने कहा "टप्पा कौन गायेगा? मैं ऐसे गज़ल का नाम तुझे बताता हूं जो इन दिनों सब के ज़बान पर रवां हो रही है—गा—"ऐमाहे—आलम, सोज़-मन" क्यों याद है न? मगर मीरसाहब, एक प्याला और देना आप मेरे साकी हैं, क्यों हैं न? मैं भी आप के लिये एक गज़ल बनाता हूं जैसे हज़रत हाफ़िज़ साहब मरहूम मुल्लमहूअल्लाह अपने साकी के शान में लिख गये हैं। ओह! पहिले की मय तो उमदा थी मगर मीरसाहब इसके ज़ायके में कुछ फ़र्क है"।

मैंने कहा "जी हां होगा, आप देखते ही हैं कि इस बोतल पर किसी और किस्म का कागज़ लगा है, शायद यह उससे उमदा है"।

उसने कहा "अगर उमदा है तो फिर क्या, यही तो चाहियेही मीरसाहब, हां मोती ले अब शुरू कर"।

मोती ने हुक्म के साथही राग छेड़ा और खां के बजाने के साथ उसका गाना ऐसा उमदा जमा कि वह काबिल किसी दर्बार के सुनने के था।

खतम होने पर मैंने और पीरखां ने कहा "वाह! वाह! शाबाश, अफ़सोस कि इस जंगल में आप दोनों साहबों का कोई क़द्रदां नहीं, खां साहब अब आप की बारी है"।

उसने कहा "ज़रा एक प्याला और मीरसाहब—मेरे साकी! अगर हज़ारों बोतल होतीं तो हम लोग हर रोज़ शब के वक्त शौक करते। उमदी मय और खुशदे सोहबत की तारीफ़ हमेशा से शायरान क़दीम व हाल करते आये हैं"।

प्याला ख़तम ख़तम करने के बाद गफ़ूरखां ने पूछा 'अभी कुछ ज्यादा बचा है न?"

मैंने कहा "जी हां करीब आधी बोतल है"।

'तो मोती को भी एक प्याला दीजिये मीरसाहब?"

मोतीराम ने कहा "माफ़ कीजिये मैं हिन्दू और ब्राह्मण हूं"।

गफ़ूरखां ने कहा 'तुझे तो अहल-इस्लाम होना चाहिये था मोती, तेरे नाम के पीछे राम के बनिस्बत खां बहुत अच्छा लगता। अगर तू बिहिश्त में गया होता तो रसूलिल्लाह ने तुझे वहां ज़ुरूर गवाया होता"।

गफ़ूरखां की आवाज़ अब कुछ भारी पड़ने लगी, गज़ल जो उसने शुरू की वह पूरी न उतरती थी, मगर तवायफ़ों के मानिन्द उसकी इशारेबाजियों का करना और भाव बतलाना देख कर बेतहाशा हँसी आती थी।

बाद एक मिसरा गाने के उसने कहा "आह मेरा गला खुश्क हुआ जाता है मीरसाहब, एक प्याला और दीजिये, सच तो यों है कि कुछ दिनों से मुझे ज़ुकाम हो गया था इसी से मेरा गला भारी है"।

एक प्याला पीने के बाद उसने फिर गाने की कोशिश की मगर इस मर्तबः भी वैसीही नाकामयाबी हुई। वह बार बार खांसता ताकि गला साफ़ हो जाय मगर शराब और उससे भी बत्तर अफीम ने अपना असर शुरू कर दिया था और बेहोशी के आसार उस पर दिखलाई पड़ने लगे।

फिर वह नशे में चूर हो कहने लगा "मोती!—मेरे मोती!—मेरे गवैये! ज़रा गा तो सही—खुदा की मार इस मुल्क के पानी पर जो गवैयों का गलाही मार देता है, गा म्यां, तू गा मैं बजाता हूं उम्मेद है कि मीरसाहब ने आज की खु-मारी उतारने के लिये कोई न कोई चीज़ ज़रूर मँगा रक्खी होगी"।

मोती फिर गाने लगा मगर खां का बजाना बिलकुल बेमेल था, आखिर उसने सितार रख दिया और कहने लगा—

"मीरसाहब दिन भर की मेहनत (हिटकी) * और तकलीफ़ के बाद इन बादमाश पिण्डारियों को हांकते (हिटकी) और चिल्लाते २ मेरा हाथ और गला रह गया,—तो अब कहिये (हिटकी) कैसे गाना बजाना हो। फिर यह क्यों

* अफीम की ज्यादती से गफ़ूरखां को हिटकियां आने लगीं।

कर मुमकिन है मीरसाहब कि यह गफूरखां तीन हजार सवारों का अफ़सर हो कर गवैयों की म्वाफिक गा बजा सके? अल्लाह जानता है कि मुझ से यह नहीं हो सकता (हिटकी)। मगर इन हिटकियों के मारे तो मेरी तबीयत घबड़ा गई क्या इसकी कोई दवा आप के पास नहीं है?"

मैंने कहा 'एक प्याला शराब और लीजिये खांसाहब, इसकी दवा सिवाय मै के और कुछ नहीं, लीजिये अभी एक प्याला और बाकी है।"

उसने कहा "लाइये सब दे दीजिये मैं इसे खड़े ही खड़े उन काफ़िर फिरंगियों के मानिन्द पी जाऊं ताहम् जैसा कि मैं आप से कह चुका हूं मैं उनकी नौकरी ज़रूर करूंगा और शराब पीऊंगा। आप कहते थे कि वे खड़ेही खड़े पीते हैं और क्या कहते हैं?"।

मैंने कहा 'हिप! हिप!! हिप!!! मैंने यह हाल एक खिदमतगार की ज़बानी जो चन्दरोज़ तक नौकरी कर उनकी तमाम हरकतें देख चुका है, सुना था।

उसने पूछा "क्या? हिप! हिप!! हिप!!! बस योंही न? माशाअल्ला इसके क्या मानी?"।

मैंने कहा "शायद इससे वे अपने रसूलिल्लाह को याद करते हैं जैसे हम लोग कहते हैं कि बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"।

उसने कहा "आप बजा फ़र्माते हैं मीरसाहब, ज़रा मेरा हाथ धर कर उठाइये तो सही क्योंकि मुझे यह खेमा घूमता सा मालूम पड़ता है। मुझे उठाइये और मैं इस प्याले को आख़िरी क़तरे तक बतौर सादिक़ मुसलमान नहीं नहीं फ़िरंगी के पी जाऊंगा। ह! ह!! ह!!! क्यों मैंने दुरुस्त कहा न?"

मैंने उसे हाथ पकड़ कर खड़ा किया और कहने लगा "खूब कहा खां साहब यह लीजिये प्याला मौजूद है"।

उसने प्याले को उठाया और कहने लगा "बिसमिल्लाह हिप! हिप!! हिप!!! उसकी गर्दन सीने पर झुक गई आंखें घूमने लगीं और ज्योंही उसने आगे दौड़ने की कोशिश की कि मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।

पीरखां ने कहा "बस खां साहब बस, चाहे फिरंगी बनो चाहे मुसलमान, तुमने तो आज खूब तमाशा दिखलाया"।

मैंने कहा "उठाओ उठाओ और उसे सीधा करो मैं तैयार हूं तुममें से कोई शख्स झिरनी देवे"।

उन्होंने उसे उठा कर बैठा दिया मगर उसकी गर्दन फिर झुक गई और मुंह से फेन बहने लगा।

मोती ने कहा "यह तो मरने लगा इसे न छूना चाहिये"।

मैंने कहा "हर्गिज़ नहीं, तमाम मैखोरों की यही हालत होती है मैंने सैकड़ोंही की यह नौबत देखी है इतना कह मैं रूमाल ले उसके पीछे जा खड़ा हुआ और बोला उसका सिर सीधा करो और झिरनी दो"।

पीरखां ने झिरनी दी मैंने उसी दम रूमाल दे कर उसका काम तमाम किया। छटपटाया तो वह बहुत मगर अमीरअली के हाथ तले पड़ कर बिचारे ग़फ़ूरखां की क्या ताक़त थी जो बच सके।

पीरख़ां ने जो उसका दोनों पैर पकड़े था कहा "बस मीरसाहब बस काफी है, खां साहब तो हो चुके।"

मैंने कहा "अलहम्दुलिल्लाह शुक्र है अल्लाताला और भवानी का। जल्द लूघों को बुलाओ और इसे फौरन् मीट्टी दो अब साईस का फ़िक्र करो।"

हमलोगों ने खां की लाश तो वहीं छोड़ी और बाहर निकले जहां मेरे दूसरे लोग इन्तज़ार में बैठे थे, मैंने पूछा कहां है साईस?"

उनमें से एक ने कहा 'वह सामने करीब एक घंटे से नींद में बेहोश पड़ा है।'

पीरख़ां ने कहा "बेहतर है उसे मेरे लिये छोड़ दीजिये।"

मैं देखता था कि पीरख़ां और मोती दोनों उसके पास पहुंचे। मोती ने पैर से एक ठोकर दी और ज्योंही वह उठकर आंखें मलने लगा कि पीरख़ां ने रूमाल उसके गले में दिया। अभी उसे होश भी न हुई थी कि वह बेदम होकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

बस अब खुर्जी की तालाश और लाशों के दफ़न करने सिवाय कोई काम बाकी न रहा। एक छिछली सी क़बर जल्द खोद ली गई उधर तो लुघाई लोग क़ब्र तयार करते थे इधर मैं मोतीराम वो पीरख़ां को साथ लेकर खुर्जी में से सोना वगैरह निकालने लगा। उसका जो कुछ माल था उसने सब ज़ेवर वगैरह

गलाकर इसी में भर लिया था। कीमत का अन्दाज़ करने की फुरसत हमें न थी, पस फौरन ज़ीन को छुरे से टुकड़े २ काट कर ताकि उसमें कुछ छूट न गया हो, लाशों के साथ दफन कर दिया।

मोतीराम ने कहा "मीरसाहब घोड़ा क्या किया जाय। इसे साथ नहीं ले चल सकते क्योंकि तमाम लश्कर में ऐसा कोई शख्स नहीं जो गफूरखां के घोड़े को न पहचानता हो। और अब इतना वक्त भी हमे नहीं है कि इसे खून से तर कर छोड़ दें।"

कुछ देर तक तो मेरी अक्ल घबड़ाई क्योंकि उस अस्प लासानी को अपने साथ रखने में ज़ाहिर होजाने का खतरा था मैंने कहा "अब क्या करूं। फौरन एक तरकीब दिल में उठी। मैंने कहा मोती इसे भी खतम करो इसमें शक नहीं कि वह जानवर निहायत उमदा है मगर हमलोगों की जान इसके बनिस्बत ज्यादातर बेशकीमत है इस मैदान में एक तीर के फासले पर एक निहायत गहरा ग़ार है तुम लोगों से कोई उसे जानता है?"

सभों ने कहा "हम लोग नहीं जानते"।

मैंने कहा "तो मैंही खुद जाता हूं गाजसखां तुम मेरे साथ आओ हमलोग इसे उसी ग़ार में ढकेल देंगे जाओ उसे खूंटे से खोल लाओ"।

"गाजसखां घोड़े को खोल लाया और हम दोनों उस जानवर को गार के मुंह पर ले गये। यह खन्दक निहायत गहरी और ठीक हमारे मतलब की थी क्योंकि इसके किनारे सीधे और खड़े थे।

जब वह घोड़े को ठीक किनारे पर लाया मैंने कहा "बस अब इसकी लगाम पकड़ कर एक तरफ़ को गर्दन करो, ढकेलने के पेश्तर इसे भी मार डालना चाहिये"।

उसने उसकी गर्दन फेरी और मैंने म्यान से तलवार निकाल कर ज़ोर से उसके गर्दन के नीचे तरफ फेर दी। खून की धार बड़े ज़ोर से निकली और ज्योंही वह पीछे हटा कि हमने उसे खन्दक में ढकेल दिया, वह इस ज़ोर से गिरा कि उसके तह पर पहुंचने की आवाज़ हमारे कान में आई। मैंने झुक कर देखा तो सिवाय उस घोड़े के घरघराहट की आवाज़ के कान में आने के

कुछ देख न पड़ता था। मैंने गाजसखां से कहा चलो, यह भी खतम हुआ आज सुबह होने के पेश्तर गीदड़ों की खूब सैर होगी और यहां कोई शख्स ख़ाबो-खयाल में भी खांसाहब को तलाश करने न आवेगा मगर इस उमदे जानवर के मारे जाने पर मुझे निहायत अफ़सोस हुआ।"

उसने कहा "यह खासा एक हज़ार रुपये का माल था और हैदराबाद में इसकी इतनी कीमत जरूर उठती। आपने इसे वहां क्यों न भेज दिया? मैं लेकर चला गया होता।"

मैंने कहा "मुझे उस वक़्त यह ख्याल न हुआ पर खैर अब क्या हो सकता है ताहम् निमावाड़ पहुंचने के पेश्तर हमलोग बहुत कुछ पैदा कर लेंगे।"

उसने पूछा "क्योंकर मीरसाहब? इस गरीब मुल्क में तो हमारे हाथ कुछ भी नहीं लगता।"

मैंने कहा "गाजस खां तुम मुझ पर एतकाद रक्खो अभी तो हमने शुरू किया है और इनशा-अल्ला हमारी यह कार्रवाई बराबर ज़ारी रहेगी।"

इधर मैं खेमें में पहुचा उधर लूघाइयों ने अपना तमाम काम बखूबी अंजाम दे रक्खा था। जिस मुकाम पर खां और उसके साईस को दफ़न किया था वहां निहायत सफाई के साथ दरी बिछा दी गई थी और हमसब बाआराम उसी पर सो रहे।

दूसरे दिन सुबह को गफूरखां अपने मामूली काम पर नज़र न आया, हजारों तरह की बातें लोग उसके गायब होने पर कहते मगर कोई भी ठीक सबब बयान न कर सकता था। कोई कहता कि शैतान उसकी बदजातियों के बाइस उसे उठा ले गया, कोई कहता कि उसने दौलत बेशुमार लूटा और अपने खुर्जी में भरे रहता था पस शायद इस खौफ़ से कि कहीं चीतू छीन न ले वह मकान को भाग गया।

मंजिल पहुंचने पर चीतू ने मुझे बुला भेजा, मैं फौरन् कपड़े पहिन चलपड़ा, देखता क्या हूं कि चीतू का दर्बार खिलकत से भरा है और गफूरखां के तमाम नौकर व गुलाम हाथ बांधे साम्हने बतौर कैदियों के गिरफ़ार हैं। मैंने झुक कर मामूली सलाम की और चीतू ने मुझे अपने पास बैठने का हुक्म इर्शाद फर्माया।

मेरा एतकाद न करेगा, क्योंकि मैं जानता था कि हुजूर की निगाहेमेहर अमीरअली पर है और कोई शिकायत उसके बखिलाफ़ न सुनी जायगी" ।

मैंने कनात में एक छोटा सा सूराख़ अपनी तलवार से कर लिया था और उसी में आंख लगाये साफ़ देख रहा था – देखता क्या हूं कि चीतू ने उठ कर एक हाथ अपने सिर पर गुस्से से मारा और कहा "बेशक, अल्लाह जानता है, मैं हर्गिज़ तेरा एतबार न करता मगर तमाम बातें तेरे बयान से इस कदर मिलती हैं कि मुझे लाचार एतकाद करना पड़ा । कौन जानता था कि अमीरअली ने जो इस कदर रहमदिल और ख़ैरख़्वाह था ; – जो हरएक जुल्म के बखिलाफ़ था ! – जो मेरी ज्यादतियों पर इस कदर शिकायत करता कि खुद मुझे शर्मिन्दा होना पड़ता था, यह काम किया ? – कौन जानता था कि वह ठग है ?"

उस कम्बख़्त ने कहा 'मगर नव्वाबसाहब, रास्त तो योंही है कि जिस वक़्त हुजूर उन्हें गिरफ़ार करेंगे मेरे अर्ज़ करने की सचाई खुद सबूत हो जायगी, बल्कि हुजूर देखेंगे कि गफूरखां की तलवार अब तक पीरखां के पड़तले में मौजूद है, उसने अपनी तलवार उसी दिन से फेंक दी' ।

चीतू ने कहा "बस यह सबूत काफ़ी है, मगर तू उनके साथ शरीक क्योंकर हुआ ?"

हिदायतखां ने कहा "बन्देनेवाज़ ताबेदार अपने गांव में जो जालौन के नज़दीक वाक़ै है रहता था, मैं पीरू (याने पीरखां) को पेश्तर से जानता था, उसने मुझसे कहा कि तुम मेरे और हमारे जमादार के साथ चलकर पिंडारियों में शरीक होओ । मुझे मुतलक मालूम न था कि ये सब ठग हैं – और फिर कौन जान सकता था जब कि अमीरअली और उसके वालिद दोनों की इज़्ज़त राजा के दर्बार में इस कदर ज्यादा है । गफूरखां के मारने के पेश्तर उन्होंने कभी ऐसा बद काम न किया था ।"

चीतू ने एक दूसरे शख़्स से जो वहीं पास खड़ा था और जिसको शकल मैं पहिचानता था कहा "ख़ैर, तमाम इन्तिजाम तो होही चुका है जल्द उसे काम में लाना चाहिये, तुमारे तमाम सवार तयार हैं न ?"

'जी हुजूर' उसने कहा "वे सब अपने २ घोड़ों के पास खड़े फ़कत आपकी